

Jyotisyam.com

HEALTH . WEALTH . HAPPINESS



PREMIUM REPORT CUSTOMIZED FOR YOU

"INDIA'S FIRST AI BASED ASTROLOGY SERVICES BUILT
BY IITians AND 90+ RENOWNED ASTROLOGERS"



CERTIFICATE
OF TRUST

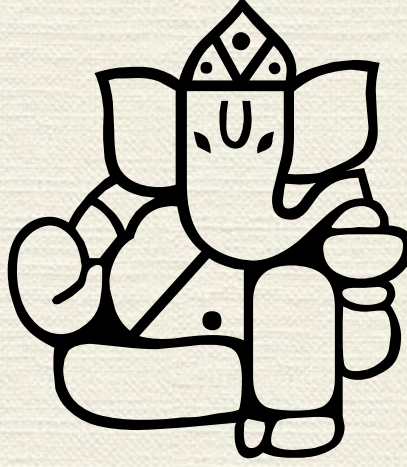


CREATED BY
90+ RENOWNED
ASTROLOGERS



AI BASED
PREDICATBILITY

SERVED OVER 107 MILLION SMILES



जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल संपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु
इस कुंडली का निर्माण किया गया



पंचाग फलादेश

नाम : Arun Shah (पुरुष)

सप्ताह के दिन में : सोमवार

(आपका जन्म मंगलवार को सूर्योदय के पहले हुआ था। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दिन की शुरुवात सूर्योदय के बाद ही होती है। इसलिए आपकी जन्म तिथि सोमवार को माना जायेगा।)

सोमवार के दिन जन्म होना आपको मृदुभाषी और मधुर बनाता है। आप ऐसी स्थितियों में भी संयमित रहते हैं जहां ज्यादातर लोग क्रोधित हो जाते हैं। आपके दिल के इरादे नेक हैं।

जन्म नक्षत्र : आर्द्रा

जन्म नक्षत्र आर्द्रा है। आप अपनी जवानी से सुखमय जीवन बिताएंगे। आप एक से ज्यादा विषयों का अध्ययन करने में और सीखने में प्रवीण हैं। आपका मन विश्लेषणात्मक है। आप एक अच्छे समाज सेवक भी होंगे। यात्राएँ होंगी और दूरदेश में रहने से लाभ होगा। आत्मार्थता, निष्पक्षता एवं सहयोग आपके गुण होंगे। आपके इस कार्य कुशलता से निकट के लोग अपरिचित रहेंगे। बचपन से ही प्रोत्साहन दिया जाये तो समाज में आप श्रेष्ठ नाम कमा सकते हैं। विवाह से पहले विदेश यात्रा का योग है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति एक सीमा तक मिलेगी। किसी कारण से लक्ष्य प्राप्ति न हुई तो दुखी होना व्यर्थ होगा। आपका स्वाभिमान कई बार दुःख का कारण बन सकता है। अकारण जीवन साथी के सामने झुकने में आत्मसम्मान बाधा बन सकता है। पारिवारिक जीवन में पति पत्नी में कुछ न कुछ झगड़ा होता रहता है। पर सामान्यतः जीवन सुखमय होगा। बचपन में जो सुख के सपने देखे थे वे साकार होना कठिन है। फिर भी साधारण दृष्टि से जीवन सुखमय होगा।

चक्रङ्ग ७

जन्म नक्षत्र पुनर्वसु है। एक सज्जन के तौर पर आप किसी बुराई या असत्य और अधर्म से दूर रहनेवाले हैं। भाग्य और कुशलता आपका साथ देगी। आप कार्य कुशल होते हुए भी छोटे मोटे झगड़ों के निमित्त बनेंगे। इस कारण मानसिक तनाव सहना होगा। भौतिक प्रगति होने पर भी पारिवारिक झगड़े होते रहना संभव है। आपको खुश करना आसान है और नाराज करना उससे भी आसान है। बचपन में भाई-बहन के साथ और विवाह के बाद पत्नी के साथ छोटी छोटी बातों पर सम्बंध बिगड़ने वाले हैं। दूसरों की दृष्टि में सम्मान कमाने के इच्छुक हैं। आप लोभी स्वभाव से मुक्त हैं। परिवार के अंग से अति निकट का संबन्ध रखना पसंद नहीं करते। स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा है पर आप के मन में कोई डर लगा रहता है। जीवन में आप को सभी नई सुविधाएँ प्राप्त होंगी। एक बुजुर्ग के तौर पर सन्तानों से प्रश्न उठ सकते हैं। आपको अपने बड़े छोटे भाइयों की सहायता करनी होगी।

एक सुखी परिवार से योग्य सभी श्रेष्ठ लक्षणों से संपन्न हैं। जो प्राप्त है और प्राप्त हो रहा है उसमें संतोष माननेवाले हैं। स्वभाव से आप जरा क्रोधी हैं। कभी-कभी आग बबुला सा हो जाते हैं। फिर भी पत्नी और संतानों के साथ अच्छा व्यवहार रखनेवाले हैं। स्पष्ट और ठोस बात करने का स्वभाव होने के कारण छोटे-मोटे क्लेश का निमित्त बन सकते हैं।

दांपत्य जीवन सुख और संतोष से भरा रहेगा। छोटी-छोटी बातों को ज़रूरत से ज्यादा महत्व देने की आदत रखते हैं। इस कारण से व्यर्थ का मानसिक तनाव उत्पन्न होता है और दुःखी होना पड़ता है। इस आदत से छुटकारा पाना आप के लिए लाभदायी होगा। अन्यथा आप पत्नी के लिए बोझ बन सकते हैं। संतानों से सुखःदुख मिश्रित फल प्राप्त होता रहेगा। पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक प्रायः सहनशील, सुन्दर, मित्रयुक्त, शौकीन, प्रतापी, धन संपन्न, दानी, जनप्रिय, भोगी, गौरवर्ण, मेधावी, गृहकार्यदक्ष, उच्चाभिलाषी, स्वच्छ वस्त्रधारी या शिक्षा क्षेत्र में जुड़ने वाला होता है।

तिथि : पंचमि

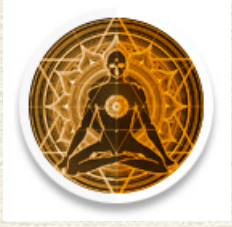
आपका जन्म पंचमी तिथि में हुआ है। ज्ञान और धन आपके साथी हैं। आप परोपकारी हैं। सहायता माँगने वालों की सहायता की जाती है। समूह में आप भाग्यशाली माने जाते हैं। आप लोकप्रिय बनेंगे। स्त्री पुत्र-मित्र के सुख से युक्त होंगे। आप दानी व दयालु होंगे।

करण : तैत्ति

क्योंकि आपने तैत्ति करण में जन्म लिया है अपने विचारों और वाक्यों पर टिका रहना मुश्किल समझते हैं। अक्सर आप अपने अनुमानों पर अडिग नहीं रहते। आप अपना आवास हमेशा बदलते रहेंगे।

नित्य योग : शिव

आपका जन्म शिव नित्ययोग में होने से आप गंभीर और अन्य लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। किसीकी सलाह परामर्श के बिना आप स्वयं पुरुषार्थ से कोई काम नहीं कर सकते। अपनी कार्यशक्ति और निपुणता अन्य के सामने प्रकट करने में असफल रहते हैं। आप ईश्वर भक्त और उसकी शक्तियों में श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति हैं। इस कारण अत्यधिक आत्मबल के मालिक हैं। मन्त्र में रुचि होगी। इन्द्रियों को वश में रख पाना आपके लिए सरल होगा।



नाम
लिंग
जन्म तिथि
जन्म समय(Hr.Min.Sec)
समय क्षेत्र (Hrs.Mins)
जन्म स्थान
रेखांश&अक्षांश(Deg.Mins)
अयनांश

जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद
जन्म राशी - राशी स्वामी
लग्न - लग्न स्वामी
तिथि



सूर्योदय
सूर्योस्त
दिनमान(Hrs. Mins)
दिनमान(Nazhika.Vinazhika)
स्थानीय समय
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि
कलिदिन
दशा पद्धति

नक्षत्र स्वामी
गण, योनी, पशु
पक्षी, वृक्ष



चन्द्र अवस्था
चन्द्र वेला
चन्द्र क्रिया
दग्ध राशी
करण
नित्य योग
सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान
अंगादित्य का स्थिति
Zodiac sign (Western System)

योग बिंदु - योगी नक्षत्र
योगी ग्रह



दुय्यम योगी
अवयोगी नक्षत्र - ग्रह
आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश
अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)
अरुद्ध लग्न (पद लग्न)
धन अरुद्ध

: Arun Shah
: पुरुष
: 25 अक्तूबर 1994 मंगलवार
: 05:45:00 AM Standard Time
: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
: Varanasi
: 83.0 पूर्व, 25.20 उत्तर दिशा
: चैत्रपक्ष = 23 डिग्री(अंश). 47 मिनिट(कला).
: 15 सेकेन्ड(विकला)

: **आर्द्रा - 1**
: **मिथुन - बुध**
: तुला - शुक्र
: पंचमि, कृष्णपक्ष

: 06:01 AM Standard Time
: 05:23 PM
: 11.22
: 28.25
: Standard Time + 2 Min.
: सोमवार
: 1861184
: विंशोत्तरी, साल = 365.25 दिन

: राहु
: मनुष्य, स्त्री, श्वान
: कोयल, शीशम
: 1 / 12
: 2 / 36
: 3 / 60
: मिथुन, कन्या
: तैलिल
: शिव
: तुला - स्वाती
: ह्यथ
: Scorpio

: 348:6:32 - रेवती
: बुध
: गुरु
: मृगशिरा - मंगल
: बुध - कन्या
: गुरु
: तुला
: मीन



ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चिमी पद्धति के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्यून और प्लूटो को भी शामिल किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - वृश्चिक

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला
लग्न	206:53:14	गुरु	230:0:59
चंद्र	90:59:45	शनी	335:52:59 वक्री
सूर्य	211:21:17	हर्शल	292:36:44
बुध	203:18:28 वक्री	नेप्ट्यून	290:42:45
शुक्र	225:15:39 वक्री	प्लूटो	236:56:18
मंगल	130:56:46	अयन	225:22:4

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्योतिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायन रेखांश को घटा कर निरायन मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धति से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं:

चैत्रपक्ष = 23 डिग्री(अंश). 47 मिनट(कला). 15 सेकेन्ड(विकला).

ग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
लग्न	183:5:58	तुला	3:5:58	चित्रा	3
चंद्र	67:12:29	मिथुन	7:12:29	आर्द्रा	1
सूर्य	187:34:2	तुला	7:34:2	स्वाती	1
बुध	179:31:13	कन्या	29:31:13 वक्री	चित्रा	2
शुक्र	201:28:24	तुला	21:28:24 वक्री	विशाखा	1
मंगल	107:9:31	कर्क	17:9:31	आश्लेषा	1
गुरु	206:13:44	तुला	26:13:44	विशाखा	2
शनी	312:5:44	कुंभ	12:5:44 वक्री	शततारका	2
राहु	201:34:49	तुला	21:34:49	विशाखा	1
केतु	21:34:49	मेष	21:34:49	भरणी	3
गुलिक	50:47:2	वृषभ	20:47:2	रोहिणी	4



नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

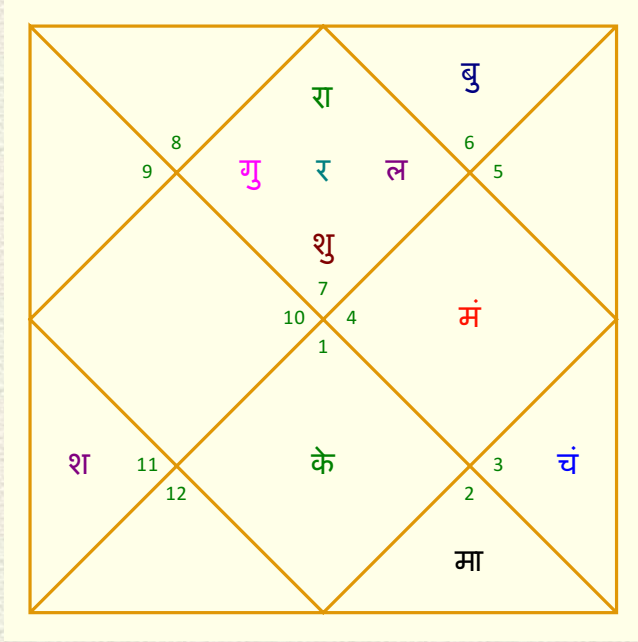
ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	चित्रा	मंगल	शुक्र	सूर्य
चंद्र	आर्द्रा	राहु	राहु	गुरु
सूर्य	स्वाती	राहु	राहु	बुध
बुध	चित्रा	मंगल	शनी	राहु
शुक्र	विशाखा	गुरु	गुरु	मंगल
मंगल	आश्लेषा	बुध	बुध	शुक्र
गुरु	विशाखा	गुरु	केतु	गुरु
शनी	शततारका	राहु	शनी	राहु
राहु	विशाखा	गुरु	गुरु	राहु
केतु	भरणी	शुक्र	गुरु	मंगल
गुलिक	रोहिणी	चंद्र	शुक्र	शुक्र

निरयन सारिणी संक्षिप्त (डिग्री(अंश). मिनिट(कला). सेकेन्ड(विकला).)

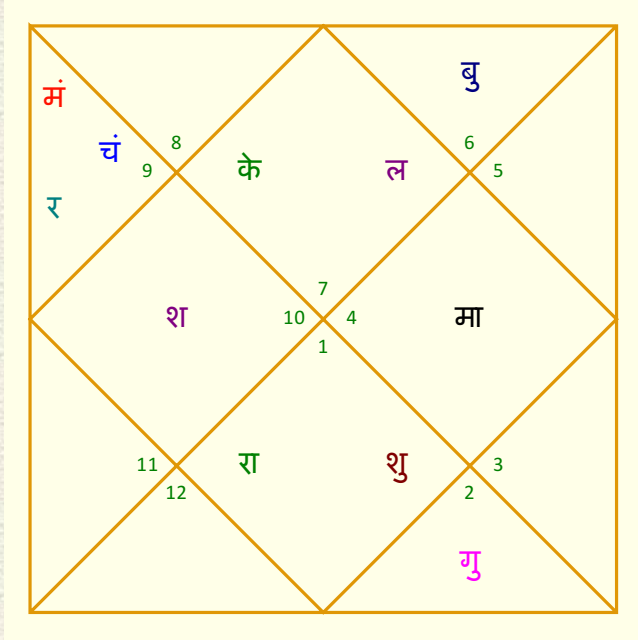
ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	ग्रह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	तुला	3:5:58	चित्रा /3	गुरु	तुला	26:13:44	विशाखा /2
चंद्र	मिथुन	7:12:29	आर्द्रा / 1	शनी	कुंभ	12:5:44R	शततारका /2
सूर्य	तुला	7:34:2	स्वाती / 1	राहु	तुला	21:34:49	विशाखा /1
बुध	कन्या	29:31:13R	चित्रा /2	केतु	मेष	21:34:49	भरणी /3
शुक्र	तुला	21:28:24R	विशाखा /1	गुलिक	वृषभ	20:47:2	रोहिणी /4
मंगल	कर्क	17:9:31	आश्लेषा /1				



राशी

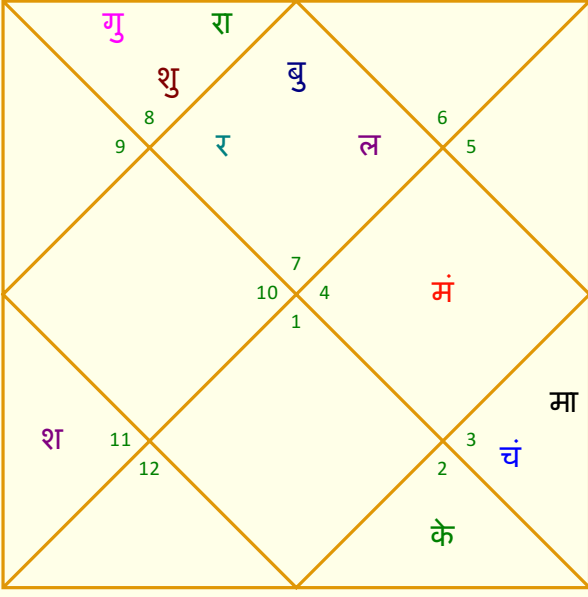


जन्म के समय दशा का भोग्य काल = राहु 17 साल, 3 मास, 6 दिन
नवांश





भाव कुंडली

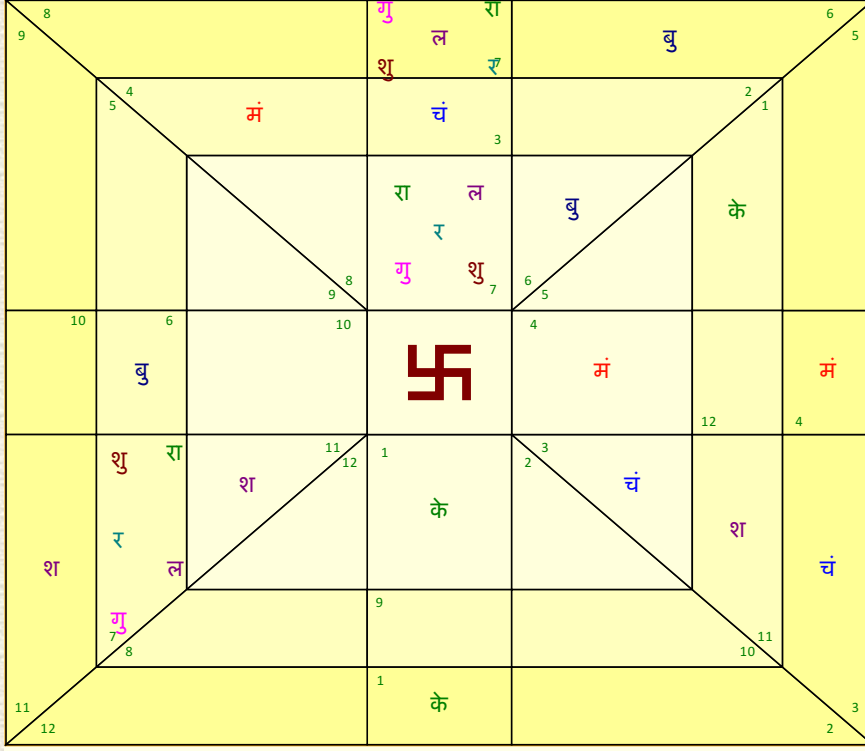


भाव कोष्टक

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्री(अंश):मिनट(क ला):सेकेन्ड(विकला)	मध्य (मध्य) डिग्री(अंश):मिनट(क ला):सेकेन्ड(विकला)	अन्त्य (अंत) डिग्री(अंश):मिनट(क ला):सेकेन्ड(विकला)	ग्रह भाव स्थिती
1	168:5:58	183:5:58	198:5:58	र,बु
2	198:5:58	213:5:58	228:5:58	शु,गु,रा
3	228:5:58	243:5:58	258:5:58	
4	258:5:58	273:5:58	288:5:58	
5	288:5:58	303:5:58	318:5:58	श
6	318:5:58	333:5:58	348:5:58	
7	348:5:58	3:5:58	18:5:58	
8	18:5:58	33:5:58	48:5:58	के
9	48:5:58	63:5:58	78:5:58	चं,मा
10	78:5:58	93:5:58	108:5:58	मं
11	108:5:58	123:5:58	138:5:58	
12	138:5:58	153:5:58	168:5:58	



सुदर्शन चक्र



चं=चंद्र र=सूर्य बु=बुध शु=शुक्र मं=मंगल गु=गुरु श=शनी रा=राहु के=केतु

उपग्रह

हर ग्रह की स्थितिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार हैं।

धुमादी योग के उपग्रह

ग्रह	उपग्रह	गणना प्रणाली
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्री(अंश). 20 मिनट(कला).
राहु	व्यतिपात	360 - धूम
चंद्र	परिवेश	180 + व्यतिपात
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतु	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्री(अंश). 40 मिनट(कला).

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्चात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते हैं। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता। जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागों में विभाजित पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयोग किया गया है। प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहधीपती के अधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्थिति अनुसार एक तीसरी पद्धति का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है। इस प्रकार से प्राप्त गुणफल को 'एस्ट्रो विज़न' कुंडली में 'मांडी' कहा गया है और जन्मपत्रिका में मुख्य ग्रह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।



दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 घटि	10 घटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
बुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकृत प्रणाली : लग्न के अन्तिम चरणों में।

ग्रह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	20:32:33	22:7:18
बुध	अर्धप्रहर	1:16:48	2:51:33
मंगल	मृत्यु	23:42:3	1:16:48
गुरु	यमघंट	2:51:33	4:26:18
शनी	गुलिक	18:57:48	20:32:33

रेखांश उपग्रह

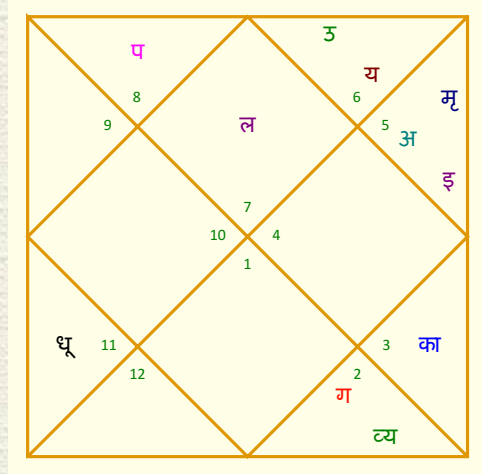
उपग्रह	रेखांश अंश:कला:विकला	राशी	राशी के रेखांश अंश:कला:विकला	नक्षत्र	पद
काल	81:26:22	मिथुन	21:26:22	पुनर्वसु	1
अर्धप्रहर	143:57:37	सिंह	23:57:37	पूर्वा	4
मृत्यु	122:46:13	सिंह	2:46:13	मघा	1
यमघंट	165:25:0	कन्या	15:25:0	हस्त	2
गुलिक	59:57:13	वृषभ	29:57:13	मृगशिरा	2
परिवेश	219:5:57	वृश्चिक	9:5:57	अनुराधा	2
इन्द्रचाप	140:54:2	सिंह	20:54:2	पूर्वा	3
व्यतिपात	39:5:57	वृषभ	9:5:57	कृत्तिका	4
उपकेतु	157:34:2	कन्या	7:34:2	उत्तरा	4
धूम	320:54:2	कुंभ	20:54:2	पूर्वाभाद्रपदा	1



उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	पुनर्वसु	गुरु	गुरु	मंगल
अर्धप्रहर	पूर्वा	शुक्र	शनी	गुरु
मृत्यु	मघा	केतु	शुक्र	बुध
यमघंट	हस्त	चंद्र	गुरु	राहु
गुलिक	मृगशिरा	मंगल	शनी	गुरु
परिवेश	अनुराधा	शनी	शुक्र	राहु
इन्द्रचाप	पूर्वा	शुक्र	गुरु	केतु
व्यतिपात	कृत्तिका	सूर्य	शुक्र	गुरु
उपकेतु	उत्तरा	सूर्य	केतु	शनी
धूम	पूर्वाभाद्रपदा	गुरु	गुरु	शुक्र

उपग्रह राशी



का = काल अ = अर्धप्रहर मृ = मृत्यु य = यमघंट ग = गुलिक प = परिवेश इ = इन्द्रचाप व्य = व्यतिपात उ = उपकेतु धू = धूम

कारकांश (जेमिनी सूत्र)

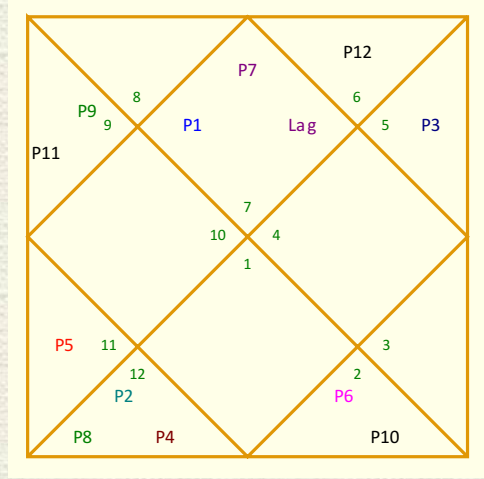
कारक	ग्रह
1 आत्मकारक (आत्मा)	बुध कारकांश: कन्या
2 अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति)	गुरु
3 भातृकारक (भाई / बहन)	शुक्र
4 मातृकारक (माता)	मंगल
5 पुत्र (संतान)	शनी
6 जाति (संबंधी)	सूर्य
7 दारा (पति या पत्नी)	चंद्र



अरुद्ध पद (जेमिनी सूत्र)

कोड	अरुद्ध / पद	राशी
P1	अरुद्ध लग्न (पद लग्न)	तुला
P2	धन अरुद्ध	मीन
P3	पराक्रम भातृपद	सिंह
P4	मात्र (सुख)	मीन
P5	मंत्र / पुत्र पद	कुंभ
P6	रोग / शत्रु पद	वृषभ
P7	धर / कलत्र / स्त्रीपद	तुला
P8	मृत्यु / मरण / आयुपद	मीन
P9	पित्र / भाग्य / धर्मपद	धनु
P10	कर्म / राज्यपद	वृषभ
P11	लाभ / आयपद	धनु
P12	व्यय / उपपद	कन्या

अरुद्ध चक्र





षोढसवर्ग तालिका

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	7	3	7	6:	7	4:	7	11	7	1	2:
होरा	5	5	5	5	4:	5	4:	5	4:	4:	5
द्रेष्कान	7	3	7	2:	3	8:	3	3	3	9	10:
चतुर्थांश	7	3	10:	3	1	10:	4:	2:	1	7	8:
सप्तांश	7	4:	8:	6:	12:	2:	1	1	12:	6:	12:
नवांश	7	9	9	6:	1	9	2:	10:	1	7	4:
दशांश	8:	5	9	11	2:	5	3	3	2:	8:	4:
द्वादशांश	8:	5	10:	5	3	10:	5	3	3	9	10:
सोडशांश	2:	12:	5	12:	12:	10:	2:	11	12:	12:	4:
विशान्व	3	9	6:	12:	3	12:	6:	5	3	3	10:
चतुर्विंशांश	7	10:	11	3	10:	5	1	2:	10:	10:	8:
भम्श	9	1	1	6:	2:	1	6:	5	2:	8:	10:
त्रिंशांश	1	11	11	8:	3	12:	7	9	3	3	10:
खवेदांश	5	10:	11	10:	5	5	11	5	5	5	10:
अक्षवेदांश	5	7	12:	5	9	2:	4:	11	9	9	12:
शष्टियांश	1	5	10:	5	1	2:	11	11	2:	8:	7
ओजराशी गणना	13	12	10	7	10	6	9	13	9	9	2

1 - मेष 2 - वृषभ 3 - मिथुन 4 - कर्क 5 - सिंह 6 - कन्या
7 - तुला 8 - वृश्चिक 9 - धनु 10 - मकर 11 - कुंभ 12 - मीन

वर्गोत्तम

बुध लग्न वर्गोत्तम में है।



षोडसवर्ग अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	शु	+बु	~शु	^बु	^शु	+चं	~शु	^श	+शु	+मं	शु
होरा	र	+र	^र	+र	~चं	+र	+चं	~र	=चं	=चं	र
द्रेष्कान	शु	+बु	~शु	+शु	+बु	^मं	~बु	+बु	+बु	+गु	श
चतुर्थांश	शु	+बु	~श	^बु	=मं	=श	+चं	+शु	=मं	=शु	मं
सप्तांश	शु	^चं	+मं	^बु	=गु	=शु	+मं	~मं	~गु	~बु	गु
नवांश	शु	=गु	+गु	^बु	=मं	+गु	~शु	^श	=मं	=शु	चं
दशांश	मं	+र	+गु	=श	^शु	+र	~बु	+बु	+शु	+मं	चं
व्वादशांश	मं	+र	~श	+र	+बु	=श	+र	+बु	+बु	+गु	श
सोडशांश	शु	=गु	^र	=गु	=गु	=श	~शु	^श	~गु	+गु	चं
विशान्ध	बु	=गु	=बु	=गु	+बु	+गु	~बु	~र	+बु	~बु	श
चतुर्विंशांश	शु	=श	~श	^बु	+श	+र	+मं	+शु	+श	~श	मं
भम्श	गु	=मं	+मं	^बु	^शु	^मं	~बु	~र	+शु	+मं	श
त्रिंशांश	मं	=श	~श	=मं	+बु	+गु	~शु	=गु	+बु	~बु	श
खवेदांश	र	=श	~श	=श	~र	+र	=श	~र	~र	+र	श
अक्षवेदांश	र	=शु	+गु	+र	=गु	=शु	+चं	^श	~गु	+गु	गु
शष्टियांश	मं	+र	~श	+र	=मं	=शु	=श	^श	+शु	+मं	शु

^स्ववर्ग + मैत्रीपूर्ण = सम ~ शत्रु

वर्ग भेद

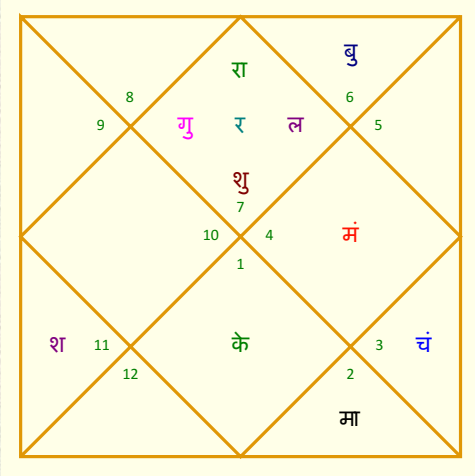
स्ववर्ग और उच्च वर्ग के लिए अंक दिए गए हैं

ग्रह	षड्वर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडसवर्ग
चंद्र	0-	1-...	1-...	1-...
सूर्य	1-...	1-...	2-पारिजातांश	3-कुसुमांश
बुध	2-सुक्ष्ममांश	3-व्यजनांश	3-उत्तमांश	6-कीरलाअंश
शुक्र	1-...	2-सुक्ष्ममांश	4-गोपुरांश	5-कन्दुकांश
मंगल	2-सुक्ष्ममांश	2-सुक्ष्ममांश	3-उत्तमांश	5-कन्दुकांश
गुरु	1-...	1-...	1-...	3-कुसुमांश
शनी	2-सुक्ष्ममांश	2-सुक्ष्ममांश	4-गोपुरांश	5-कन्दुकांश

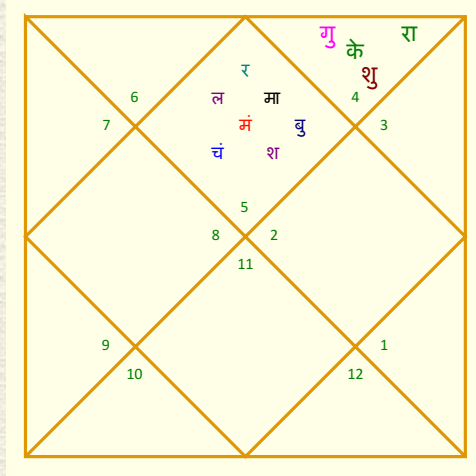
षोडसवर्ग तालिका



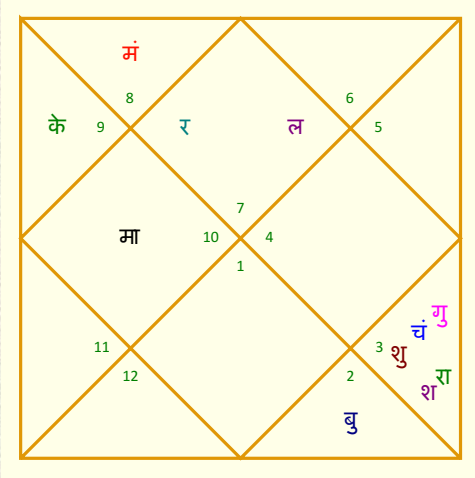
राशी[D1]



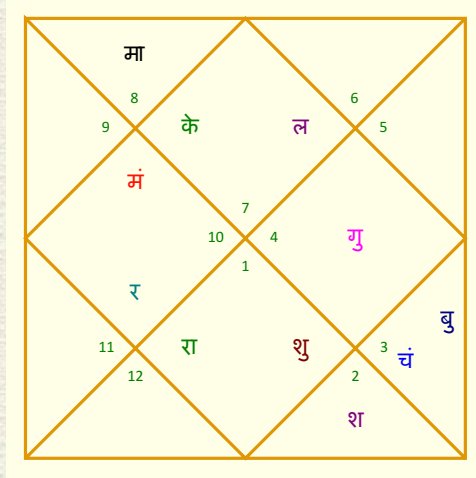
होरा[D2]



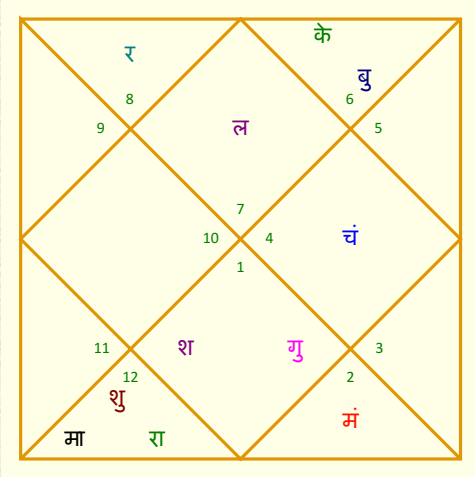
द्रेष्कान[D3]



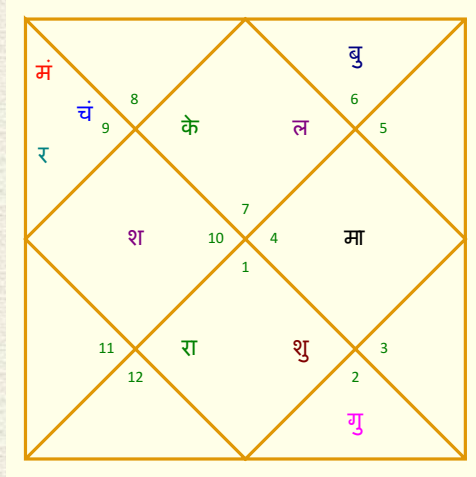
चतुर्थांश[D4]



सप्तांश[D7]

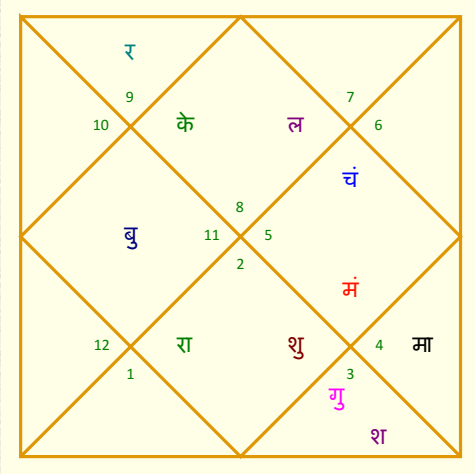


नवांश[D9]

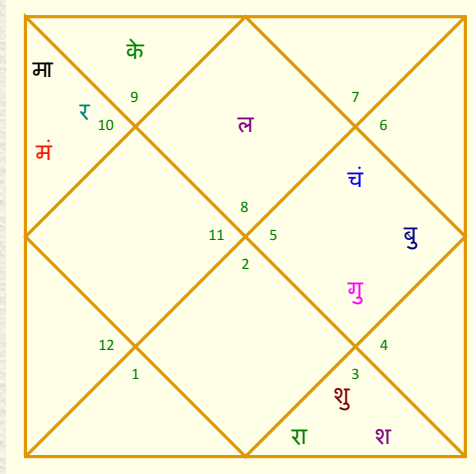




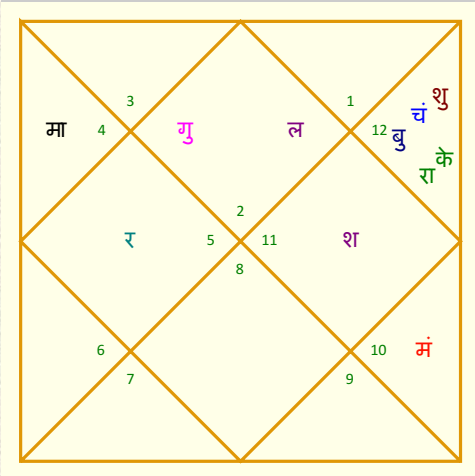
दशांश[D10]



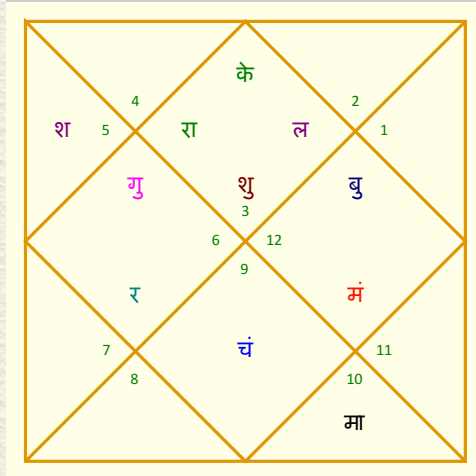
व्दादशांश[D12]



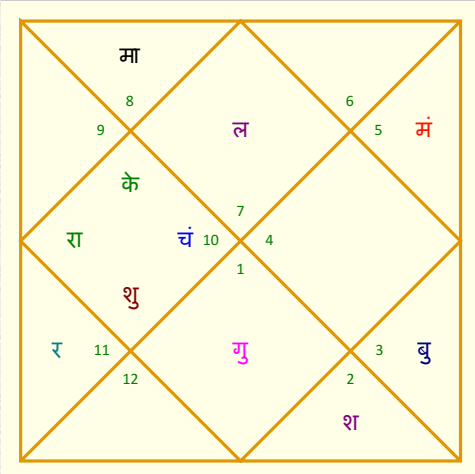
सोडशांश[D16]



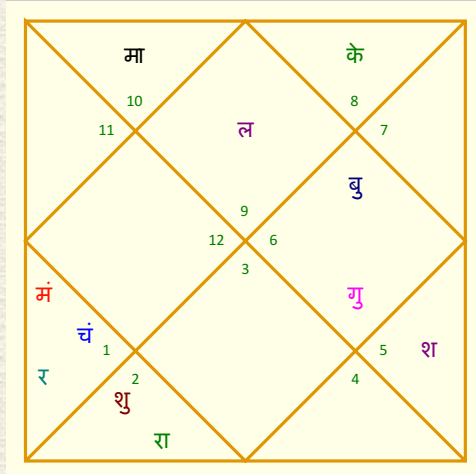
विशान्श[D20]



चतुर्विंशांश[D24]

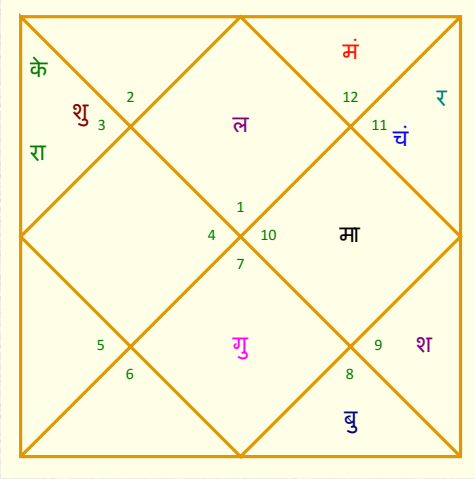


भम्श[D27]

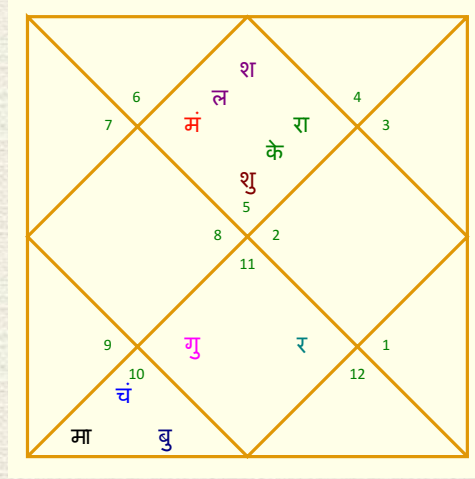




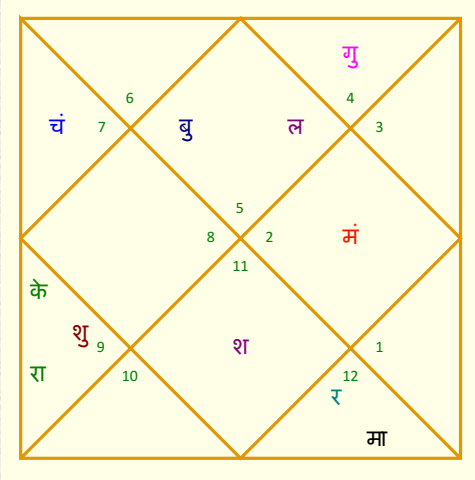
त्रिंशंश[D30]



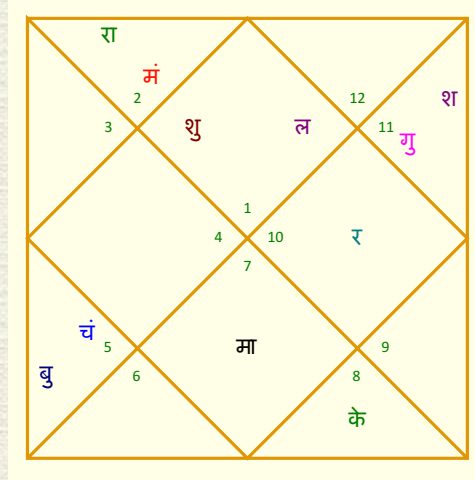
खवेदांश[D40]



अक्षवेदांश[D45]



शष्टियांश[D60]





प्रस्तार अष्टकवर्ग - चंद्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1	1	1	1	1	1		7
वृषभ		1			1	1			3
मिथुन	1		1	1			1		4
कर्क		1	1	1		1	1	1	6
सिंह	1	1		1	1	1		1	6
कन्या			1		1	1			3
तुला						1			1
वृश्चिक	1		1		1				3
धनु	1	1	1	1	1		1	1	7
मकर			1	1		1			3
कुंभ				1					1
मीन	1	1	1		1			1	5
कुल	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तार अष्टकवर्ग - सूर्य

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1		1	1				4
वृषभ		1	1		1		1		4
मिथुन		1	1			1			3
कर्क		1	1		1			1	4
सिंह	1	1	1		1	1	1	1	7
कन्या				1			1	1	3
तुला		1			1		1		1
वृश्चिक	1	1	1				1		4
धनु							1	1	2
मकर		1	1		1			1	4
कुंभ			1		1	1	1		4
मीन	1			1	1	1	1	1	6
कुल	4	8	7	3	8	4	8	6	48



प्रस्तार अष्टकवर्ग - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1				1				2
वृषभ			1	1	1	1	1	1	6
मिथुन		1	1	1					3
कर्क	1		1		1			1	4
सिंह		1	1	1	1	1	1	1	7
कन्या	1	1	1			1	1		5
तुला				1	1		1	1	4
वृश्चिक	1		1	1			1	1	5
धनु				1			1		2
मकर	1		1	1	1			1	5
कुंभ		1	1	1	1		1		5
मीन	1	1			1	1	1	1	6
कुल	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तार अष्टकवर्ग - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1						1		2
वृषभ	1	1	1	1	1	1	1	1	8
मिथुन	1			1	1	1	1	1	6
कर्क	1		1	1		1			4
सिंह	1	1		1		1		1	5
कन्या	1	1			1		1		4
तुला	1			1			1	1	4
वृश्चिक			1	1	1		1	1	5
धनु				1	1		1	1	4
मकर	1		1	1				1	4
कुंभ	1		1	1		1		1	5
मीन					1				1
कुल	9	3	5	9	6	5	7	8	52



प्रस्तार अष्टकवर्ग - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1				1				2
वृषभ				1	1		1		3
मिथुन									0
कर्क		1	1		1	1		1	5
सिंह	1	1		1	1	1	1	1	7
कन्या				1		1	1		3
तुला					1		1	1	3
वृश्चिक	1		1				1		3
धनु		1					1	1	3
मकर			1		1				2
कुंभ		1	1		1		1		4
मीन		1		1		1		1	4
कुल	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तार अष्टकवर्ग - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1			1	1	1	1	6
वृषभ		1	1		1	1			4
मिथुन		1	1	1			1	1	5
कर्क	1	1	1	1	1	1	1	1	8
सिंह		1		1	1	1		1	5
कन्या			1						1
तुला	1	1	1		1	1		1	6
वृश्चिक		1		1		1		1	4
धनु	1	1	1			1			4
मकर		1	1		1	1	1	1	6
कुंभ	1		1	1	1			1	5
मीन				1				1	2
कुल	5	9	8	6	7	8	4	9	56



प्रस्तार अष्टकवर्ग - शनी

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	कुल
मेष	1	1	1		1		1		5
वृषभ		1	1		1				3
मिथुन			1		1		1		3
कर्क		1	1				1	1	4
सिंह	1	1	1	1		1		1	6
कन्या				1	1	1			3
तुला		1						1	2
वृश्चिक	1	1			1				3
धनु					1		1	1	3
मकर		1						1	2
कुंभ			1			1			2
मीन				1		1		1	3
कुल	3	7	6	3	6	4	4	6	39

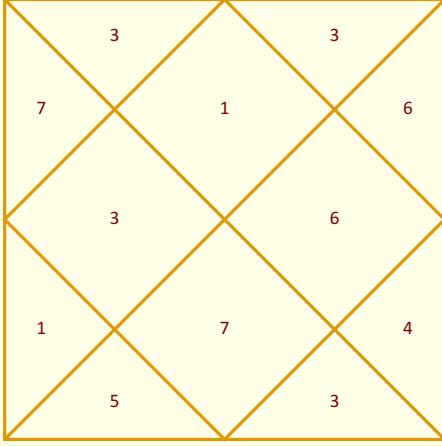
अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष	7	4	2	2	2	6	5	28
वृषभ	3	4	6	8	3	4	3	31
मिथुन	4	3	3	6	0	5	3	24
कर्क	6	4	4	4	5	8	4	35
सिंह	6	7	7	5	7	5	6	43
कन्या	3	3	5	4	3	1	3	22
तुला	1	3	4	4	3	6	2	23
वृश्चिक	3	4	5	5	3	4	3	27
धनु	7	2	2	4	3	4	3	25
मकर	3	4	5	4	2	6	2	26
कुंभ	1	4	5	5	4	5	2	26
मीन	5	6	6	1	4	2	3	27
	49	48	54	52	39	56	39	337

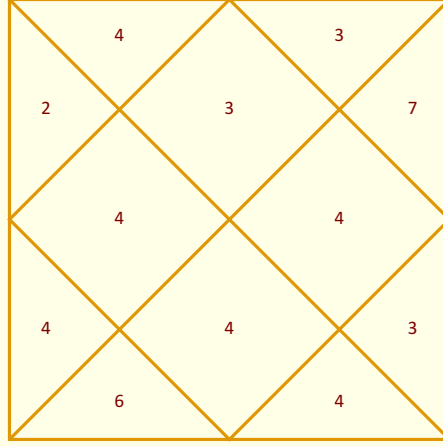


अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

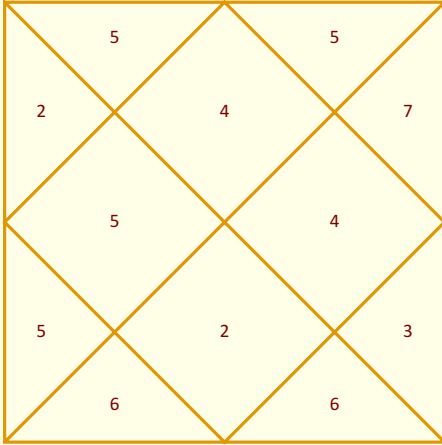
चंद्र अष्टकवर्ग 49



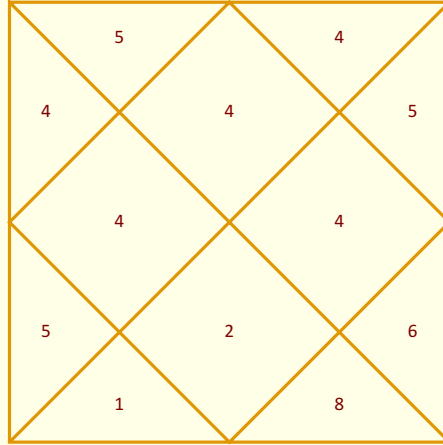
सूर्य अष्टकवर्ग 48



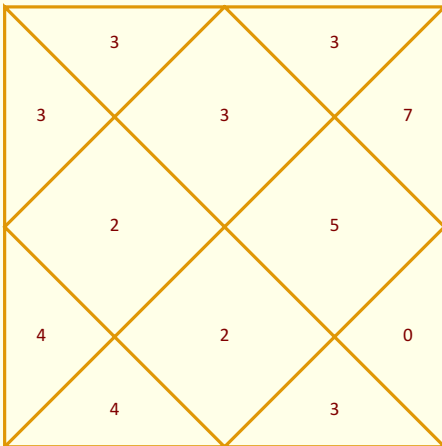
बुध अष्टकवर्ग 54



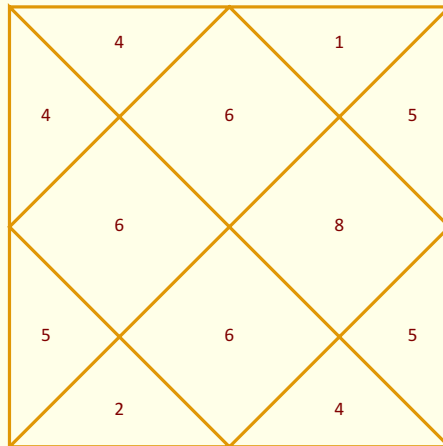
शुक्र अष्टकवर्ग 52



मंगल अष्टकवर्ग 39



गुरु अष्टकवर्ग 56





शनी अष्टकवर्ग 39

3	3	
3	2	6
2	4	
2	5	3
3	3	

अष्टकवर्ग - त्रिकोण हीस

चंद्र अष्टकवर्ग 10

0	0	
1	0	0
0	3	
0	1	3
2	0	

बुध अष्टकवर्ग 12

1	0	
0	1	5
0	0	
2	0	0
2	1	

सर्व अष्टकवर्ग 337

	27		22	
25		23		43
	26		35	
26		28		24
	27		31	

सूर्य अष्टकवर्ग 12

0	0	
0	0	5
1	0	
1	2	0
2	1	

शुक्र अष्टकवर्ग 19

4	0	
2	0	3
0	3	
1	0	2
0	4	



મંગલ અષ્ટકવર્ગ 18

0	1
1	3
0	2
4	0
1	1

ગુરુ અષ્ટકવર્ગ 20

2	0
0	1
5	6
0	2
0	3

શની અષ્ટકવર્ગ 9

0	1
0	3
0	1
0	2
0	1

સર્વ અષ્ટકવર્ગ 100

7	2
4	22
6	15
8	7
7	11

અષ્ટકવર્ગ - એકાધિપત્ય હાસ

ચંદ્ર અષ્ટકવર્ગ 9

0	0
1	0
0	3
0	1
1	0

સૂર્ય અષ્ટકવર્ગ 11

0	0
0	5
0	0
1	2
2	1



बुध अष्टकवर्ग 11

1	0
0	1
0	0
2	0
2	0

शुक्र अष्टकवर्ग 19

4	0
2	0
0	3
1	0
0	4

मंगल अष्टकवर्ग 15

0	1
0	3
0	2
4	0
0	0

गुरु अष्टकवर्ग 14

0	0
0	1
5	6
0	0
0	1

शनी अष्टकवर्ग 9

0	1
0	0
0	1
0	2
0	1

सर्व अष्टकवर्ग 88

5	2
3	5
5	15
8	5
5	7

विंशोत्तरी दशा का संक्षिप्त विवरण

दशा आरम्भ की आयु (वर्ष: मास: दिवस)(YY:MM:DD)

गुरु > 17:03:06 शनी > 33:03:06 बुध > 52:03:06 केतु > 69:03:06 शुक्र > 76:03:06



दशा और भुक्ती का विवरण काल(साल = 365.25 दिन)

जन्म के समय दशा का भोग्य काल = राहु 17 साल, 3 मास, 6 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्त्य
राहु	राहु	25-10-1994	13-10-1996
राहु	गुरु	13-10-1996	08-03-1999
राहु	शनि	08-03-1999	12-01-2002
राहु	बुध	12-01-2002	01-08-2004
राहु	केतू	01-08-2004	19-08-2005
राहु	शुक्र	19-08-2005	19-08-2008
राहु	सूर्य	19-08-2008	14-07-2009
राहु	चन्द्र	14-07-2009	13-01-2011
राहु	मंगल	13-01-2011	31-01-2012
गुरु	गुरु	31-01-2012	20-03-2014
गुरु	शनि	20-03-2014	01-10-2016
गुरु	बुध	01-10-2016	07-01-2019
गुरु	केतू	07-01-2019	13-12-2019
गुरु	शुक्र	13-12-2019	13-08-2022
गुरु	सूर्य	13-08-2022	02-06-2023
गुरु	चन्द्र	02-06-2023	01-10-2024
गुरु	मंगल	01-10-2024	07-09-2025
गुरु	राहु	07-09-2025	31-01-2028
शनि	शनि	31-01-2028	03-02-2031
शनि	बुध	03-02-2031	13-10-2033
शनि	केतू	13-10-2033	22-11-2034
शनि	शुक्र	22-11-2034	22-01-2038
शनि	सूर्य	22-01-2038	04-01-2039
शनि	चन्द्र	04-01-2039	04-08-2040
शनि	मंगल	04-08-2040	13-09-2041
शनि	राहु	13-09-2041	20-07-2044
शनि	गुरु	20-07-2044	31-01-2047



बुध	बुध	31-01-2047	29-06-2049
बुध	केतू	29-06-2049	26-06-2050
बुध	शुक्र	26-06-2050	26-04-2053
बुध	सूर्य	26-04-2053	02-03-2054
बुध	चन्द्र	02-03-2054	02-08-2055
बुध	मंगल	02-08-2055	29-07-2056
बुध	राहू	29-07-2056	15-02-2059
बुध	गुरु	15-02-2059	23-05-2061
बुध	शनि	23-05-2061	31-01-2064
केतू	केतू	31-01-2064	28-06-2064
केतू	शुक्र	28-06-2064	28-08-2065
केतू	सूर्य	28-08-2065	03-01-2066
केतू	चन्द्र	03-01-2066	04-08-2066
केतू	मंगल	04-08-2066	31-12-2066
केतू	राहू	31-12-2066	19-01-2068
केतू	गुरु	19-01-2068	25-12-2068
केतू	शनि	25-12-2068	03-02-2070
केतू	बुध	03-02-2070	31-01-2071
शुक्र	शुक्र	31-01-2071	01-06-2074
शुक्र	सूर्य	01-06-2074	02-06-2075
शुक्र	चन्द्र	02-06-2075	30-01-2077
शुक्र	मंगल	30-01-2077	02-04-2078
शुक्र	राहू	02-04-2078	01-04-2081
शुक्र	गुरु	01-04-2081	01-12-2083
शुक्र	शनि	01-12-2083	31-01-2087
शुक्र	बुध	31-01-2087	01-12-2089

नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नहीं है।



प्रत्यंतर दशा

दशा : गुरु अपहार : सूर्य

1.र	13-08-2022 >> 28-08-2022	2.चं	28-08-2022 >> 21-09-2022
3.मं	21-09-2022 >> 08-10-2022	4.रा	08-10-2022 >> 21-11-2022
5.गु	21-11-2022 >> 30-12-2022	6.श	30-12-2022 >> 15-02-2023
7.बु	15-02-2023 >> 28-03-2023	8.के	28-03-2023 >> 14-04-2023
9.शु	14-04-2023 >> 02-06-2023		

दशा : गुरु अपहार : चंद्र

1.चं	02-06-2023 >> 12-07-2023	2.मं	12-07-2023 >> 10-08-2023
3.रा	10-08-2023 >> 22-10-2023	4.गु	22-10-2023 >> 26-12-2023
5.श	26-12-2023 >> 12-03-2024	6.बु	12-03-2024 >> 20-05-2024
7.के	20-05-2024 >> 17-06-2024	8.शु	17-06-2024 >> 06-09-2024
9.र	06-09-2024 >> 01-10-2024		

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	01-10-2024 >> 21-10-2024	2.रा	21-10-2024 >> 11-12-2024
3.गु	11-12-2024 >> 25-01-2025	4.श	25-01-2025 >> 20-03-2025
5.बु	20-03-2025 >> 07-05-2025	6.के	07-05-2025 >> 27-05-2025
7.शु	27-05-2025 >> 23-07-2025	8.र	23-07-2025 >> 09-08-2025
9.चं	09-08-2025 >> 07-09-2025		

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	07-09-2025 >> 16-01-2026	2.गु	16-01-2026 >> 13-05-2026
3.श	13-05-2026 >> 29-09-2026	4.बु	29-09-2026 >> 31-01-2027
5.के	31-01-2027 >> 23-03-2027	6.शु	23-03-2027 >> 16-08-2027
7.र	16-08-2027 >> 29-09-2027	8.चं	29-09-2027 >> 11-12-2027
9.मं	11-12-2027 >> 31-01-2028		

दशा : शनी अपहार : शनी

1.श	31-01-2028 >> 23-07-2028	2.बु	23-07-2028 >> 26-12-2028
3.के	26-12-2028 >> 28-02-2029	4.शु	28-02-2029 >> 30-08-2029
5.र	30-08-2029 >> 24-10-2029	6.चं	24-10-2029 >> 24-01-2030
7.मं	24-01-2030 >> 29-03-2030	8.रा	29-03-2030 >> 09-09-2030
9.गु	09-09-2030 >> 03-02-2031		

दशा : शनी अपहार : बुध

1.बु	03-02-2031 >> 22-06-2031	2.के	22-06-2031 >> 19-08-2031
3.शु	19-08-2031 >> 29-01-2032	4.र	29-01-2032 >> 19-03-2032
5.चं	19-03-2032 >> 09-06-2032	6.मं	09-06-2032 >> 05-08-2032
7.रा	05-08-2032 >> 30-12-2032	8.गु	30-12-2032 >> 10-05-2033
9.श	10-05-2033 >> 13-10-2033		



दशा : शनी अपहार : केतु

1.के	13-10-2033 >> 06-11-2033	2.शु	06-11-2033 >> 12-01-2034
3.र	12-01-2034 >> 01-02-2034	4.चं	01-02-2034 >> 07-03-2034
5.मं	07-03-2034 >> 31-03-2034	6.रा	31-03-2034 >> 30-05-2034
7.गु	30-05-2034 >> 23-07-2034	8.श	23-07-2034 >> 26-09-2034
9.बु	26-09-2034 >> 22-11-2034		

दशा : शनी अपहार : शुक्र

1.शु	22-11-2034 >> 03-06-2035	2.र	03-06-2035 >> 31-07-2035
3.चं	31-07-2035 >> 04-11-2035	4.मं	04-11-2035 >> 10-01-2036
5.रा	10-01-2036 >> 02-07-2036	6.गु	02-07-2036 >> 03-12-2036
7.श	03-12-2036 >> 04-06-2037	8.बु	04-06-2037 >> 15-11-2037
9.के	15-11-2037 >> 22-01-2038		

दशा : शनी अपहार : सूर्य

1.र	22-01-2038 >> 08-02-2038	2.चं	08-02-2038 >> 09-03-2038
3.मं	09-03-2038 >> 29-03-2038	4.रा	29-03-2038 >> 20-05-2038
5.गु	20-05-2038 >> 05-07-2038	6.श	05-07-2038 >> 29-08-2038
7.बु	29-08-2038 >> 17-10-2038	8.के	17-10-2038 >> 07-11-2038
9.शु	07-11-2038 >> 04-01-2039		

दशा : शनी अपहार : चंद्र

1.चं	04-01-2039 >> 21-02-2039	2.मं	21-02-2039 >> 26-03-2039
3.रा	26-03-2039 >> 21-06-2039	4.गु	21-06-2039 >> 06-09-2039
5.श	06-09-2039 >> 07-12-2039	6.बु	07-12-2039 >> 27-02-2040
7.के	27-02-2040 >> 01-04-2040	8.शु	01-04-2040 >> 06-07-2040
9.र	06-07-2040 >> 04-08-2040		

दशा : शनी अपहार : मंगल

1.मं	04-08-2040 >> 27-08-2040	2.रा	27-08-2040 >> 27-10-2040
3.गु	27-10-2040 >> 20-12-2040	4.श	20-12-2040 >> 22-02-2041
5.बु	22-02-2041 >> 21-04-2041	6.के	21-04-2041 >> 14-05-2041
7.शु	14-05-2041 >> 21-07-2041	8.र	21-07-2041 >> 10-08-2041
9.चं	10-08-2041 >> 13-09-2041		

दशा : शनी अपहार : राहु

1.रा	13-09-2041 >> 16-02-2042	2.गु	16-02-2042 >> 05-07-2042
3.श	05-07-2042 >> 16-12-2042	4.बु	16-12-2042 >> 13-05-2043
5.के	13-05-2043 >> 13-07-2043	6.शु	13-07-2043 >> 02-01-2044
7.र	02-01-2044 >> 23-02-2044	8.चं	23-02-2044 >> 20-05-2044
9.मं	20-05-2044 >> 20-07-2044		



दशा : शनी अपहार : गुरु

1.गु	20-07-2044 >> 20-11-2044	2.श	20-11-2044 >> 15-04-2045
3.बु	15-04-2045 >> 25-08-2045	4.के	25-08-2045 >> 18-10-2045
5.शु	18-10-2045 >> 21-03-2046	6.र	21-03-2046 >> 06-05-2046
7.चं	06-05-2046 >> 22-07-2046	8.मं	22-07-2046 >> 14-09-2046
9.रा	14-09-2046 >> 31-01-2047		

दशा : बुध अपहार : बुध

1.बु	31-01-2047 >> 05-06-2047	2.के	05-06-2047 >> 26-07-2047
3.शु	26-07-2047 >> 19-12-2047	4.र	19-12-2047 >> 01-02-2048
5.चं	01-02-2048 >> 15-04-2048	6.मं	15-04-2048 >> 05-06-2048
7.रा	05-06-2048 >> 15-10-2048	8.गु	15-10-2048 >> 09-02-2049
9.श	09-02-2049 >> 29-06-2049		



ग्रहों के स्थिती का विश्लेषण

भावों के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	:	शुक्र
दूसरा	„	(पनफर)	:	मंगल
तिसरा	„	(अपोकलीम)	:	गुरु
चौथा	„	(केन्द्र)	:	शनी
पांचवा	„	(त्रिकोण)	:	शनी
छठ्ठा	„	(अपोकलीम)	:	गुरु
सातवाँ	„	(केन्द्र)	:	मंगल
आठवाँ	„	(पनफर)	:	शुक्र
नवम	„	(त्रिकोण)	:	बुध
दशम	„	(केन्द्र)	:	चंद्र
ग्यारहवाँ	„	(पनफर)	:	सूर्य
बारहवाँ	„	(अपोकलीम)	:	बुध

ग्रहों का योग

सूर्य	ग्रहों की परस्पर दृष्टि	शुक्र,गुरु,राहु,लग्न
शुक्र	ग्रहों की परस्पर दृष्टि	सूर्य,गुरु,राहु,लग्न
गुरु	ग्रहों की परस्पर दृष्टि	सूर्य,शुक्र,राहु,लग्न

ग्रहों की भावों पर दृष्टि

सूर्य	दृष्टि	केतु
शुक्र	दृष्टि	केतु
मंगल	दृष्टि	सूर्य,शुक्र,गुरु,शनी,राहु,लग्न
गुरु	दृष्टि	चंद्र,शनी,केतु
शनी	दृष्टि	केतु



स्थान बल का विश्लेषण

चंद्र	दृष्टी	तिसरा
सूर्य	दृष्टी	सातवाँ
बुध	दृष्टी	छठठा
शुक्र	दृष्टी	सातवाँ
मंगल	दृष्टी	प्रथम, चौथा, पांचवा
गुरु	दृष्टी	पांचवा, सातवाँ, नवम
शनी	दृष्टी	दूसरा, सातवाँ, ग्यारहवां

शुभ और अशुभ ग्रह

गुरु, शुक्र और चंद्र नैसर्गिक पक्षबल के अनुसार शुभ फलदायी होते हैं। शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चंद्र को पक्षबल प्राप्त रहता है।

आपकी जन्मपत्रिका में चंद्र पक्षबल से युक्त है और वह शुभ फलदायी भी है।

बुध जब क्रूर (अशुभ) ग्रहों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अशुभ और उद्वेग उत्पन्न करने वाला ग्रह हो जाता है।

लेकिन आपकी कुंडली में बुध अशुभ ग्रहों के प्रभाव में नहीं है।

चंद्र	शुभ
सूर्य	अशुभ
बुध	शुभ
शुक्र	शुभ
मंगल	अशुभ
गुरु	शुभ
शनी	अशुभ
राहु	अशुभ
केतु	अशुभ



अशुभ और शुभ फलों का ग्रहों के भाव अधिपत्य के आधार पर निरूपण

ग्रहों के शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडली में उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर किया जाता है पर फलादेश का मुख्य आधार उनका कुंडली के भावों के अधिपत्य के अनुसार होता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा शुभ माना जाता है। इन्हें त्रिकोण भी कहा जाता है।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह भी यदि चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदायी और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ ग्रह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करते हैं, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिति है।

दूसरे, आठवें और बारहवें, स्थान के स्वामी सम या शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोड़कर अन्य सभी ग्रह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को प्राप्त करते हैं। उनके भावानुसार प्रभाव को सूक्ष्मता से देखना पड़ता है।

कुछ ज्योतिषों का मानना है कि आठवें स्थान का स्वामी सदा अमंगल और अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान के स्वामी के विषय में फलादेश उसके कुंडली में अन्य स्थान को भी विचार में लेकर करना चाहिए।

ग्रह	स्वामीत्व	स्वभाव
चंद्र	10	अशुभ
सूर्य	11	अशुभ
बुध	9 12	शुभ
शुक्र	1 8	शुभ
मंगल	2 7	शुभ
गुरु	3 6	अशुभ
शनी	4 5	शुभ

नैसर्गिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	मित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम
र	मित्र	...	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बु	शत्रु	मित्र	...	मित्र	सम	सम	सम
शु	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम	सम	मित्र
मं	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...	मित्र	सम
गु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	सम
श	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	...



तात्कालिक मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
र	शत्रु	...	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
बु	मित्र	मित्र	...	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शु	शत्रु	शत्रु	मित्र	...	मित्र	शत्रु	शत्रु
मं	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र	शत्रु
गु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	...	शत्रु
श	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...

पंचदा मित्रता कोष्टक

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	सम	अधि मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
र	सम	...	मित्र	अधि शत्रू	अधि मित्र	सम	अधि शत्रू
बु	सम	अधि मित्र	...	अधि मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शु	अधि शत्रू	अधि शत्रू	अधि मित्र	...	मित्र	शत्रु	सम
मं	अधि मित्र	अधि मित्र	सम	मित्र	...	अधि मित्र	शत्रु
गु	सम	सम	सम	अधि शत्रू	अधि मित्र	...	शत्रु
श	अधि शत्रू	अधि शत्रू	सम	सम	अधि शत्रू	शत्रु	...



षष्ठीयांश में के दृष्टीबल कोष्टक

देखने वाला ग्रह दृश्य ग्रह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
चंद्र	.	29.64	33.84	15.73	4.98	10.98	27.56
बुध	26.16	.	.	.	6.18	.	17.42
शुक्र	37.13	.	.	.	17.16	.	34.69
गुरु	39.51	.	.	.	19.54	.	37.07
					30.00		
शुभ बल	102.80	29.64	33.84	15.73	77.86	10.98	116.74
अशुभ दृष्टी							
सूर्य	-30.18	.	.	.	-10.20	.	-25.47
मंगल	.	-35.41	-27.36	-42.84	.	-40.46	-47.53
				-15.00		-15.00	
शनी	-32.44	-32.26	-36.29	-25.31	-10.13	-22.93	.
अशुभ शक्ति	-62.62	-67.67	-63.65	-83.15	-20.33	-78.39	-73.00
दृष्टी पींड	40.18	-38.03	-29.81	-67.42	57.53	-67.41	43.74
द्रिक बल	10.05	-9.51	-7.45	-16.85	14.38	-16.85	10.93

षड्बल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल							
	48.60	0.81	55.16	8.16	3.61	22.92	22.63
सप्तवर्गीय बल							
	97.50	67.51	172.50	118.13	138.75	50.64	97.51
ओजयुग्म राशी बल							
	0	30.00	0	0	15.00	15.00	15.00
केन्द्र बल							
	15.00	60.00	15.00	60.00	60.00	60.00	30.00
द्रेशकाण बल							



चं	र	बु	शु	मं	गु	श
0	15.00	0	15.00	0	0	15.00
संयुक्तस्थान बल						
161.10	173.32	242.66	201.29	217.36	148.56	180.14
संयुक्त दिगबल						
8.63	28.51	58.81	36.12	55.31	52.29	43.00
नतोन्नत बल						
29.75	30.25	60.00	30.25	29.75	30.25	29.75
पक्षबल						
80.24	19.88	40.12	40.12	19.88	40.12	19.88
त्रिभाग बल						
60.00	0	0	0	0	60.00	0
अब्द बल						
0	0	0	0	0	0	15.00
मास बल						
0	30.00	0	0	0	0	0
वार बल						
45.00	0	0	0	0	0	0
होरा बल						
0	0	0	0	0	60.00	0
आयन बल						
0.07	29.58	41.48	9.04	52.20	7.48	41.86
युद्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
215.06	109.71	141.60	79.41	101.83	197.85	106.49
संयुक्त चेषाबल						
0	0	46.49	56.57	35.41	7.28	42.61
संयुक्त नैसर्गिक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						



चं	र	बु	शु	मं	गु	श
10.05	-9.51	-7.45	-16.85	14.38	-16.85	10.93
संपूर्ण षड्बल						
446.27	362.03	507.81	399.39	441.43	423.41	391.74

षड्बल संक्षिप्त सारिणी

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
446.27	362.03	507.81	399.39	441.43	423.41	391.74
संपूर्ण शड्बल						
7.44	6.03	8.46	6.66	7.36	7.06	6.53
मौलीक आवश्यकता						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षड्बल अनुपात						
1.24	1.21	1.21	1.21	1.47	1.09	1.31
संबन्धी स्थान						
3	4	5	6	1	7	2

इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल						
44.16	3.98	50.64	21.49	11.31	12.92	31.05
कष्टफल						
15.05	48.93	8.09	13.33	37.24	44.21	25.49

षष्ठीयांश में के भाव दृष्टीबल कोष्टक

बुध ग्रह फल उसके साथ स्थित ग्रह के स्वभाव से सुनिश्चित किया जाता है।

देखने वाला ग्रह भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रव्यभाव



1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चंद्र											
8.01	1.03	12.95	11.76	8.01	4.26	0.51	.	.	.	3.24	10.22
बुध											
.	1.79	18.58	43.21	26.42	7.16	58.21	43.21	28.21	13.21	.	.
शुक्र											
.	.	1.45	6.66	9.80	4.59	5.81	13.55	9.80	6.05	2.30	.
गुरु											
.	.	3.44	21.87	41.56	23.13	13.74	56.56	41.56	26.56	11.56	.
30.00						30.00					
शुभ बल											
8.01	2.82	36.42	83.50	85.79	69.14	78.27	113.32	79.57	75.82	17.10	10.22

अशुभ दृष्टी

सूर्य											
.	.	-3.19	-10.13	-8.06	-1.12	-12.77	-11.81	-8.06	-4.31	-0.56	.
मंगल											
-7.74	-9.26	-3.52	-7.97	-13.01	-9.26	-5.51	-1.76	.	.	.	-1.99
	-3.75				-3.75						
शनी											
-8.63	-4.88	-1.13	.	.	.	-2.63	-9.00	-8.63	-2.25	-10.50	-12.38
		-11.25					-11.25				
अशुभ शक्ती											
-16.37	-17.89	-19.09	-18.10	-21.07	-14.13	-20.91	-33.82	-16.69	-6.56	-11.06	-14.37

दृष्टी पींड / द्रिक बल

-8.36	-15.07	17.33	65.40	64.72	55.01	57.36	79.50	62.88	69.26	6.04	-4.15
-------	--------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	------	-------



भावबल की तालिका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधीपती का बल											
399.39	441.43	423.41	391.74	391.74	423.41	441.43	399.39	507.81	446.27	362.03	507.81
भाव दिग्बल											
60.00	10.00	40.00	0	20.00	40.00	30.00	40.00	20.00	0	50.00	50.00
भावद्रष्टीबल											
-8.36	-15.07	17.33	65.40	64.72	55.01	57.36	79.50	62.88	69.26	6.04	-4.15
संपूर्ण भावबल											
451.03	436.36	480.74	457.14	476.46	518.42	528.79	518.89	590.69	515.53	418.07	553.66
भावबल के रूप											
7.52	7.27	8.01	7.62	7.94	8.64	8.81	8.65	9.84	8.59	6.97	9.23
संबन्धी स्थान											
10	11	7	9	8	5	3	4	1	6	12	2

अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य से बारह अंश पर चन्द्र, सत्रह अंश पर मंगल, तेरह अंश पर बुध, ग्यारह अंश से गुरु, नौ अंश पर शुक्र और पंद्रह अंश पर शनी अस्तंगत माना जाता है।

बुध अस्तंगत है।

ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारयें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुद्ध नहीं है।

अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

ग्रह	उच्च राशि में/ नीच राशि में	अस्तंगत	ग्रहयुद्ध	वक्री	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	नीच का				कुमारावस्था
बु	उच्च का	सयहोग		वक्री	बालावस्था
शु				वक्री	वृद्धावस्था
मं	नीच का				युवावस्था
गु					मित्रावस्था
श				वक्री	युवावस्था



कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकड़ों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया है।

मालव्य योग

लक्षण:

जन्मकुंडली में उच्च का स्वग्रही शुक्र, केन्द्र में।

मालव्य योग के कारण आपका जीवन आनन्दमय और धन्य रहेगा। आपका तन मन और चिंतन निर्मलता से भरा है। आप आपके निर्मल मन के कारण सहज ही दूसरों के आकर्षण का केन्द्र बन पायेंगे। श्रेष्ठ कार्यों से लाभमय फल प्राप्ति सुनिश्चित है। इच्छानुसार प्रेमपूर्ण वातावरण का सृजन करने में निपुण हैं। वाहन योग का भाग्य प्राप्त है। कलाकृति और विनोदमय कार्यों के आप रसिक हैं। आप मधुरभाषी हैं। सन्तान का सुख भी आपको प्राप्त होगा। जीवन में लगभग ८५ साल की आयु उपलब्ध होगी। नृत्य व गायन में रुचि होगी। महिलाओं का अधिक सान्निध्य अपयश कारक हो सकता है। सतर्क रहें।

नीचभंगराज योग

लक्षण:

सूर्य क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है।

दुर्बल भाव का अधिपति लग्न से केन्द्र में हैं।

उच्च राशी के ग्रह का अधिपति लग्न से केन्द्र में है।

मंगल क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है।

दुर्बल राशी में जो ग्रह आनन्दपूर्ण है, लग्न से केन्द्र में उपस्थित है।

आप अति भाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

सुनफायोग

लक्षण:

सूर्य के अतिरिक्त कोई भी ग्रह चन्द्र से दूसरे स्थान हो।

जब सुनभा योग होता है तब चन्द्र की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि रहता है। कभी-कभी उपरोक्त ग्रहों में से एक ही चन्द्र के सहयोग में रहता है। जो लोग सुनभा योग में जन्म लेते वे स्वभावतः धनी, बुद्धिमान और प्रसिद्ध होते हैं। आप दृश्यश्रव्य कलाओं के साधक हैं। सामान्यतः आप स्वयं अपनी उन्नति का कारण बनेंगे। जीवन में सफलता और प्रगति हासिल होगी। परिस्थितियों से ऊपर उठकर, स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करेंगे।

भेरी योग

लक्षण:

शुक्र और लग्नाधिपति गुरु के केन्द्र में होकर नववे स्थान का स्वामी बलवान है।

आप के आमदनी के अनेक मार्ग होंगे। आप असाध्य रोंगों से मुक्त हैं। आप के मन की विशालता और धार्मिक जीवन की अभिरुचि आपको सुख के शिखर पर पहुंचाती है। आप अपने अधिकार पद को सूक्ष्म दृष्टि से उपयोग में लाते हैं। आपका परिवार ही आपके जीवन का केन्द्र बिंदु रहेगा।

शरीर शौख्य योग

लक्षण:

लग्नाधिपति, गुरु और शुक्र केंद्र में हों।

इस योग से राजकार्य क्षेत्र से आपको सहकार और सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपकी आयु दीर्घ है और धन-संपत्ति से सुख प्राप्ति है।

सदसन्चार योग

लक्षण:

लग्नाधिपति चर राशी में हो।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।



त्रिग्रह योग

लक्षण:

तीन ग्रह एक ही भाव में स्थित हैं।

सूर्य, शुक्र, गुरु, प्रथम भाव में हैं।

आपको अच्छे आर्थिक व्यवस्था वाले लोगों पर निर्भर होना पड़ेगा। इसलिए आपको अपने इच्छा के विरुद्ध काम करना पड़ेगा। अपने आँखों के लिए विशिष्ट ध्यान देना चाहिए। मेहनत आपके बुद्धि और ज्ञान की लालसा को बढ़ावा देगी।

भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं।

व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामाजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है। यह लग्न कहलाता है।

लग्न तुलाराशि होने से कफ प्रवृत्ति का शारीरिक गठन होगा। आप सत्यभाषी और सत्यकामी बनेंगे। श्रेष्ठ पारितोषिक मिलने की संभावनाएँ हैं। जब भी मन में मलिन वृत्ति के विचार आते हैं और मन चंचल होता हो तो ईश्वर भक्ति का सहारा लेना लाभदायी होगा। बातचीत से आप सत्यभाषी व्यक्ति माने जायेंगे। बुजुर्गों के प्रति आदरभाव रखनेवाले व्यक्ति हैं। गृहसंचालक या उच्च पद पर रहकर अपनी कार्य शक्ति को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर सकते हैं। जीवन कलंक रहित एवं निर्मल होगा। जीवनकाल में अनेक सुखद और आनन्ददायी घटनाएँ घटेगी। उनका आस्वादन करने का सौभाग्य प्राप्त है। जलक्रीड़ा और समुद्र के सफर के बड़े शौकीन हैं। कठिन से कठिन कार्य सिद्ध करने वाले पुत्रों की प्राप्ति होगी। आपके पुत्र सत्यशील और ख्याति प्राप्त करने वाले होंगे। प्रिय व्यक्तियों से शत्रुत्व उत्पन्न होने की संभावना होने के कारण कार्यकुशल बनना आपके लिए अनिवार्य है। आपके क्लेश का कारण कोई स्त्री या पुरुष हो सकता है। आपका शरीर कफ प्रवृत्ति का है और आहार की वजह से अजीर्ण के रोगों की संभावनाएँ दिखाई देती हैं। शुक्र संबंधी विकारों से बचकर रहना भी हितकर होगा। विपरीत लिंगी व्यक्ति का भ्रातृ-भागिनीवत संबंध भी लोकोपवाद का कारण हो सकता है। खेत या अधिक जल से उत्पन्न वस्तु या तरल पदार्थ का व्यवसाय लाभप्रद होगा।

कारखाना स्थापित करने का भाग्य भी दिखाई देता है। सुंदर बगीचे का निर्माण योग है। विदेश यात्रा लाभदायी मान सकते हैं। बारहवें स्थान पर कन्याराशि होने के कारण आप पर विपरीत लिंग के लोगों का विशेष प्रभाव होने की संभावना है। विवाह और अन्य आडंबर पूर्ण कार्यों में यथा योग्य धन खर्च करने की सुविधा प्राप्त होगी। गुण संपन्नता और उत्तम व्यापार के द्वारा अतुलित धन संचय होगा। अपने कुल में श्रेष्ठत्व प्राप्त होगा। आयु का ३२वाँ, ३३वाँ, ३४वाँ, ३५वाँ अथवा ३६वाँ वर्ष चमत्कारिक हो सकता है।

व्यवसाय के माध्यम से, व्यापार के माध्यम से, वकालत से और राजकारण से प्रगति की बहुत संभावनाएँ दिखाई देती हैं। व्यर्थ के आडंबरपूर्ण जीवन से धन के व्यय की संभावना है। सतर्क रहने से कुछ अंश तक बच सकते हैं। ध्यान दें। सट्टेबाजी से धन-नाश की संभावना के कारण इससे दूर ही रहना आपके लिए लाभदाई होगा। आपके शरीर के किसी-न-किसी अंग उपांग पर खास प्रकार का चिन्ह दिखाई देगा। यह साधारण व्यक्तियों में दृष्ट नहीं होता है। अनुभव शक्ति के आधार से जीवन क्रम में परिवर्तन की उम्मीद है। जीवन का १७, २४, ३१, ३३, ४०, ४३ और ५७ वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण बनेंगे। ईश्वर निष्ठा में अटल रहना ही लाभदायी है।

लग्नाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आपको भौतिक सुख और स्वास्थ्य विषय में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा। स्वप्रयत्न के माध्यम से सफलता प्राप्त होगी। आपके विचार मौलिक हैं। आप धैर्यशील और निर्भय व्यक्ति हैं, फिर भी कभी कभी मन चंचल हो उठता है। परिवार के बीच मतभेद उत्पन्न न हो पाये इसकी आपको सावधानी रखनी पड़ेगी। इसमें ही आपका लाभ है। पुष्ट शरीर, चंचल स्वभाव, चरित्र विषय में अविश्वसनीय और जीवन साथी के स्वभाव या स्वास्थ्य में कुछ निर्बलता होना संभव होगा।

सूर्य प्रथम स्थान पर रहा है। आप धैर्यशील व्यक्तित्ववाले लोगों में गिने जायेंगे। छोटी-छोटी बातों को लेकर क्रोधित होने का स्वभाव है। हर कार्य बुद्धिपूर्ण रहेगा। हर कार्य में विलंब का अनुभव होगा। अनेक विषयों में विज्ञ हूँ ऐसी संभावनाओं का भ्रम पैदा होगा। आपकी आँखों में विशेष प्रकार का आकर्षण होगा।

शुक्र प्रथम स्थान पर रहने से जीवनसाथी के प्रति अनन्य प्रीति रखनेवाले हैं। ज्ञान प्राप्त होगा। प्रणय बंधन इत्यादि विषयों में अति अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं।

गुरु प्रथम स्थान पर रहने से सौन्दर्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। विज्ञान में अति अभिरुचि प्राप्त होगी। आप निर्भय और व्यवहार से विनम्र हैं। दीर्घायुषी होने का भाग्य प्राप्त है।

राहु प्रथम स्थान पर रहने से स्वास्थ्य की दृष्टि से आप स्वस्थ होने पर भी शरीरकान्ति में कमी महसूस होगी। संतान कम रहेगी। दंत पंक्ति की बनावट में कुछ विशेषता होगी।

लग्नेश स्वग्रह में उपस्थित है, यह सूचित करता है कि आप शक्ति और अधिकार युक्त पदों को हसिल करेंगे।

क्योंकि मंगल ग्रह लग्न से प्रभावित है आप दानशील होंगे।

धन, भूमि और सम्पत्ति



भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती हैं। इसे धन स्थान कहते हैं।

दूसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से आप एक विद्यासंपन्न व्यक्ति होंगे। आपको समाज के बीच मान्यता प्राप्त होगी। स्वयं ही उल्लासित बनने युक्त अनेक विनोद युक्त कार्य करने का योग है। संपूर्ण संतोष प्राप्ति ही जीवन का ध्येय बनेगा। 'कामी मानी च पण्डितः बहुदार धनैर्युक्तः सुतहीनोऽपि' कामी, अभिमानी, विद्वान, बहदुर या द्विभार्यवाले धनवान पर अल्प पुत्रवाले होना संभव है।

भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता है।

तीसरे भाव का अधिपति लग्न स्थान पर रहने से भक्तिपूर्ण कार्यों में नैसर्गिक रुचि उपलब्ध होगी। धैर्यपूर्ण स्वयं पुरुषार्थ के माध्यम से जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। आप अपार बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप की बुद्धिमत्ता अभ्यास और स्कूली शिक्षा से मुक्त है। आप की बुद्धि का विकास स्वतंत्र रूप से होगा। हर कार्य में विकारयुक्त अभिव्यक्ति संभव है। आपका क्रोध अनेक अनिष्ट संजोग उत्पन्न कर सकता है। इस कारण अपने क्रोध को लगाम देना आप के ही हित में है। नियम-संयम, आवश्यकतानुसार पौष्टिक आहार और समय-समय पर चिकित्सक का परामर्श ही आपको पूरी तरह स्वस्थ रख सकता है। अपने भाग्य के आप स्वयं ही निर्माता होंगे।

क्योंकि तीसरे भाव का स्वामी और लग्नेश साथ हैं आप अपने भाई / बहन से आत्मियता बनाए रखने का हर संभव प्रयास करेंगे।

संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि, भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी पांचवे भाव में स्थित है। आप प्रयत्नशील स्वभाव के पुरुष हैं। आपकी स्वावलंबी और क्रियाशीलता की आदत से सफलता सदा आपका साथ देगी। आपकी परिचय में आनेवाले सभी लोग आपसे प्यार करेंगे। वाहन का योग उत्तम है। आप कुलीन माता के पुत्र हैं। विद्या संपन्नता और धर्मनिष्ठता भरपूर होगी।

चौथे भाव का स्वामी शनि है। नेता पद और राजकाज के निपुणता का योग है। आप परिवार का कारोबार अति निपुणता से चलाने के योग्य हैं। विद्यालय में और खेल कूद के मैदान में अपने साथियों को श्रेष्ठ नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। यह कला, आप में बालावस्था से ही प्रकट हो उठेगी। लोक समर्थन जुटा पाना कठिन न होगा।

विद्या के अधिपति के उच्च स्थान ग्रहण करने से अभ्यास क्षेत्र में उन्नति और प्रगति प्राप्त होगी। ज्ञानार्जन की सुविधा सुलभता से उपलब्ध होगा।

भावाधिपति, बृहस्पति का स्थान अनुकूल रहने से अशुभ ग्रहों के कुप्रभाव में क्षीणता का अनुभव होगा। अन्य चतुर्थ भाव से संबंधित कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

शनि पाँचवें स्थान पर रहा है और इस कारण आपको राजी करना सरल है। छोटे बच्चों के लिए यह परिस्थिति अच्छी नहीं मानी जा सकती। कुछ बातों में आपका व्यवहार नियंत्रण से बाहर रहेगा। आपमें अनन्य धारणाशक्ति और विचारशक्ति निहित है। इन शक्तियों का योग्य प्रकार से उपयोग करने में लाभ संभव है। असावधानी से अनेक विघ्नों का सामना करना पड़ेगा।

पाँचवाँ भावाधिपति पाँचवे स्थान पर रहने से लोगों के बीच गौरवपूर्ण मान्यता प्राप्त होगी। मित्रजनों के बीच आप अतिप्रिय बनेंगे। अस्थिर स्वभाव और स्पष्टवादिता के कारण अनेक बार आपको विपरीत परिस्थितियों का सामना करना होगा। संतान सुख के लिए प्रयत्नशील रहना होगा।

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु या शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात् इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

रोग, शत्रु, कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

छठा भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से स्वास्थ्य में निर्बलता का अनुभव होगा फिर भी जीवनकाल में श्रेष्ठ प्रसिद्धि और मान-सम्मान उपलब्ध होगा। संबन्धियों से शत्रुता का अनुभव होगा। धन, दौलत और समुदाय के बीच मिली मान्यता में कोई कमी नहीं रहेगी। पुत्र सुख के लिए उपायादि करने का योग है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर है। आपका कार्यक्षेत्र निवास स्थान से दूर रहेगा। बार-बार लंबी यात्रा का योग है। आप अपनी पत्नी को इस कारण अधिक समय न दे पायेंगे। इस कारण पत्नी का मन उद्वेग से भरा रहेगा। मानसिक तनाव सतायेगा। स्नेहपूर्ण और समर्पण मनोभाव से आप अपनी पत्नी को चाहते हैं। आप शुद्ध और विशाल हृदय के हैं। अपने मन की स्थिति को सहधर्मिणी को समझाने में थोड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। विवेकपूर्ण और चतुराई से कार्य निपटाने में कभी-कभी आप असफल होते हैं। इस कारण आपको पत्नी से मिलनेवाले सहयोग और सहायता से वंचित रहना पड़ता है।



इस कारण सतर्कता और चतुराई से कार्य निपटाना आपके लिए अनिवार्य है। तीर्थस्थान यात्रा के दोनों (पति-पत्नी) इच्छुक हैं। कर्मजीविका में पत्नी का सहयोग मिल सकता है।

उत्तर दिशा से श्रेष्ठ जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

केतु सातवें स्थान पर हैं। प्रायोगिक जीवन पद्धति आपकी अपेक्षा कृत जीवन प्रणाली से अलग है। आचार-विचार में अंतर है। आत्मसंयम से चलना लाभदायक होगा। विवाह कार्य में विलंब संभव है। पत्नी के स्वास्थ्य की ओर आप को ज्यादा ध्यान देना होगा। आपका पत्नी अधिक संवेदनशील होगी। इसलिए आपको उसकी ज्यादा देखभाल करनी होगी। मानसिक विकास की कमी आप पत्नी से अनुभव करेंगे। इस कारण प्रेम में कमी का भ्रम होना संभव है। संतोष और सहिष्णुता दांपत्य जीवन की सफलता की कुंजी है।

सूर्य गुरु के अधीन रहा है। इस कारण आपकी पत्नी आत्मीय स्वभाव की ओर परिपक्व विचारों की शालीन महिला होगी। जीवन में योग्य मार्गदर्शन मिलता रहेगा और इस कारण आप भाग्यवान समझे जायेंगे।

चन्द्र गुरु के अधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद रहेगा। यह निश्चित है।

शुक्र और गुरु के योग के कारण श्रेष्ठ संतान प्राप्त होगी। पत्नी स्वस्थ और निरोगी रहेगी तथा बौद्धिक परिपक्वता से पूर्ण होगी।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पत्नी के साथ छोटे-मोटे कारणों को लेकर झगड़ा होता रहेगा। इस झगड़े को बड़ा स्वरूप न देना ही बुद्धिमानी माना जायेगा। किसी से परंपरागत संबंधों से भिन्न प्रकार के संबंध होने की संभावना होगी। पत्नी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होगी। अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु, कठिनाइयाँ

आठवें भाव से दीर्घायु, वैद्यक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवें भावाधिपति के लग्न स्थान पर रहने से शारीरिक स्वास्थ्य विषय में निर्बलता का अनुभव करना होगा। सत्योधक के रूप में नास्तिकता के प्रचारक बनना संभव है। आप ईश्वर में विश्वास कम रखेंगे। चर्म विकार और वैवाहिक जीवन से चिन्तित रहना संभव है।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववा भावाधिपति बारहवें स्थान पर है। निर्धन स्थिति का संभावना है। अति परिश्रमपूर्ण जीवन बिताना होगा। निवास स्थान से काफी समय तक दूर रहना पड़ेगा। लंबी यात्रा से गुजरना होगा। प्रतिदिन बहुत समय तक परिश्रम करना पड़ेगा। इन विपरीत संजोगों के बीच रहते हुए भी श्रेष्ठ मनोभाव और आत्मीयतापूर्ण जीवन बिताने वाले पुरुष हैं। पितृ संपत्ति की ज्यादा अपेक्षा रखना व्यर्थ है। जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें सहजता से पूर्ण होंगी। लेकिन विलंब संभव है। धैर्य के साथ जीवन में आगे बढ़ना आपके लिए लाभदायक होगा।

नौवें भाव में चन्द्र स्थित है। इसलिए आपको भाग्य एवं ऐश्वर्य प्राप्त होगा। सन्तानों, मित्रों एवं संबंधियों की कमी नहीं होगी। आप हृदय से दयालु हैं और हमेशा आदर्शवान रहे हैं। आदर्श और उदारतापूर्ण व्यवहार से सुख और शान्ति का अनुभव होगा। तीर्थ यात्रा व पुण्य कार्यों में रुचि होगी।

नवमें भावाधिपति ने श्रेष्ठ स्थान ग्रहण किया है। आप अनेक शुभ फलों को प्राप्त करनेवाले हैं। लगातार प्रगति के मार्ग पर बढ़ने का योग है।

नवमें भाव में स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति सुख संपत्ति की प्राप्ति करानेवाला है। अनेक अनिष्ट कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवां भाव व्यापार, श्रेणी या पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल या गति और अधिकार को सूचित करता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवें भाव से काम (उद्योग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेशों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका, व्यवसाय या पेशा आदि का निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष संबंधित व्यवसाय के अन्तर्गत दसवें भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, ग्रह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी नौवें भाव में है बृहत पराशर होरा के श्लोकों के अनुसार आपने एक शासन करने वाले परिवार में जन्म लिया है। आप एक महत्वपूर्ण और प्रमुख व्यक्ति बन सकते हैं। आप किसी भी हलत में अधिकारों पर नियंत्रण कर सकते हैं। आप बहुत धनवान होंगे और संतान पक्ष प्रबल होगा।

दसवें भाव में कर्क राशी है, यह एक जलप्रदान राशि है इसलिए पानी और अन्य द्रावको से संबंधित उद्योग आपके लिए उचित होंगे, अन्य उद्योग क्षेत्र हैं होटल, परिचरण, प्राचीन कला, अध्यापन, प्रवचन, प्रकाशन, दूध से उत्पन्न पदार्थ आदि। आपका समाजिक जीवन और कल्पनाशीलता की और रुझान होगा।

जल वितरण, आयात - निर्यात, नौका, भूमि या नहर खोदना, तैरने का तालाब, जल निकास, धातु, और लघुसिंचन आदि चीजों से संबंधित उद्योग क्षेत्रों में आप सफलता पा सकते हैं।

दसवें भाव में उपस्थित मंगल ग्रह आपको जनसमूह में प्रसिद्धि की इच्छा प्रदान करता है। मंगल ग्रह इंजीनियरिंग और शिल्प कला विज्ञान को



नियंत्रित करता है और यह उद्योग क्षेत्र आपके लिए उचित है।

आप अपने कारोबार या उद्योग में समर्पित होंगे। आपको पुत्र संतति अधिक होगी। आपको कुछ प्रतिष्ठित और सामर्थ्यवान लोगों के लिए काम करने की मौका मिलेगा। आपका धैर्य और शक्ति सराहनीय होगी। मंगल ग्रह भूमि का कारक होने के कारण आप अचल सम्पत्ति व्यापार, मकान निर्माण आदि में अच्छी तरह काम कर सकते हैं। दसवें भाव में उपस्थित मंगल ग्रह यह सूचित करता है कि आप फौजी जीवन में सफल होंगे। आप खेती या आग से संबंधित उद्योग को भी अपना सकते हैं।

आप एक अच्छे अध्यापक होंगे। कर्कराशि में उपस्थित मंगल ग्रह आपको पौराणिक पांडित्य में रुचि दिलाएगा। आप दयालु होंगे और आप मुसीबत के समय दूसरों की सहायता करना पसंद करते हैं।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ अन्य नतीजे भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से सम्बंधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित है।

पुस्तक विक्रेता, धार्मिक मठादिपति, डाक तार और दूरसंचार विभाग संबंधित सेल्युलर फोन, पेजर, परिवहन विभाग, परमाणु शक्ति, संचारमाध्यम, मौलिक और, प्रतिलिपि लेखन, सूचना एकत्रीकरण, विज्ञापन विभाग, पार्सल, मानव संसाधन विभाग, आर्थिक व्यवस्था, सरकारी कागजात निर्वहण ।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य कमजोर दिखाई पड़ता है। उचित स्थान - मान के लिए अपनी शिक्षा और पेशे पर ध्यान देना चाहिए।

गुरु दसवें भाव में उपस्थित है। यह आपके अच्छे परिणामों का सूचक है।

आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

ग्यारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप स्वभाव से निश्छल और आत्मीयता रखने वाले व्यक्ति हैं। हर समस्या का तटस्थ भाव से अवलोकन करने में और निर्णय लेने में निपुण हैं। साहित्य के प्रति नैसर्गिक अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। हर कार्य में सफलता आपका साथ देगी। आप विजयी बनेंगे। अनेक लाभदायी संजोग प्राप्त होंगे। विवाह के बाद ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी। समदर्शी के रूप में ख्याति मिलना संभव है।

ग्यारहवें स्थान का स्वामी केन्द्र में है। आप धन और सम्पत्ति पा सकते हैं।

खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति बारहवें स्थान पर रहने से खर्च की वृद्धि सहनी होगी। स्वास्थ्य में कमजोरी सहनी होगी। अकारण क्रोधित होना पड़ेगा। जो लोग भूतकाल में आप से पीड़ित हुए हैं उन लोगों से प्रतिकार सहना होगा।

बुध बारहवें स्थान पर रहा है। अपने फायदे के लिए दूसरों को धोखा देने में आप हिचकिचाते नहीं हैं। आपकी आपकी उपलब्धियाँ आपकी प्राप्त शिक्षा से मेल नहीं खाती हैं। आप किस्मत के धनी हैं।

ग्यारहवें स्थान का स्वामी ग्यारहवें भाव में अपनी ही राशि में स्थित है आप अपने धन संपत्ति के विषय में अत्यधिक कृपण होंगे और सोच समझकर की पैसा खर्च करेंगे।



दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

बृहस्पति अन्य ग्रहों के बीच रहा है। इस कारण बृहस्पति से मिलनेवाले अनेक श्रेष्ठ फलों से वंचित रहना पड़ेगा। अनिष्ट कार्यों के निमित्त दुःख सहना होगा।

अभ्यास क्षेत्र में निराशा का सामना करना पड़ेगा। अकारण दुःखपूर्ण घटना घट सकती है। अशुभ कार्यों के प्रति अशक्त होना पड़ेगा। उत्तर दिशा से दुःखद घटना घट सकती है। छोटी उम्र के व्यक्ति के साथ निकट का संबंध समस्या पैदा कर सकता है। अशुभ चिंतन के कारण मन उद्वेग से पीड़ित रहेगा। किसी भी कार्य में सफलता या विजय के चिन्ह दिखाई नहीं देंगे। स्वयं, पुरुषार्थ के माध्यम से, श्रेष्ठ चिंतन द्वारा आन्तरिक शुद्धि और शांति प्राप्त कर सकते हैं। यह एक ही बात आपके बस में है।

☀ (13-08-2022 >> 02-06-2023)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्ठा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। जनता के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

☀ (02-06-2023 >> 01-10-2024)

बृहस्पति दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप को लौकिक सुख की अनुभूति होगी। शत्रुओं के मनोभाव में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देगा। उनसे प्रेमपूर्ण सहकार प्राप्त होगा। बहुत लोग आपकी सहायता के लिए निकट आयेंगे। आपको अपनी योग्यता दिखानेवाले प्रमाणपत्र भी प्राप्त होंगे। विवाह संबंधी कार्यों अथवा संतान विषयक कामों में मन चाही सफलता की आशा कर सकते हैं।

☀ (01-10-2024 >> 07-09-2025)

बृहस्पति दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको आश्चर्य जनक शक्ति एवं योग्यता प्राप्त होगी। मनोबल में भी वृद्धि होगी। शत्रुओं को जीतने का सामर्थ्य प्राप्त होगा। आप प्रसिद्धि और स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। आप सुख और शांति से दिन व्यतीत कर पायेंगे। पूर्व में किसी डाक्टर ने सर्जरी करवाने की सलाह दी हो तो, इस समय में यह काम हो सकता है।

☀ (07-09-2025 >> 31-01-2028)

बृहस्पति दशा में राहु की अन्तर्दशा में अनेक विरोधी व्यक्ति क्रियाशील बनेंगे। सत्कार्य के बदले शत्रुभाव उत्पन्न होगा। मानसिक उद्वेग उत्पन्न करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। वर्तमान का निवास स्थल बदलने की इच्छा प्रबल होगी। अपने संबंधियों का स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। इस कारण अनेक तरह की कठिनाईयों का सामना करना होगा।

शनि दशा

शनि, दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दुःख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड़ सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही



कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

☀ (31-01-2028 >> 03-02-2031)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप अपने घर में और समूह के बीच अनेक क्लेशों का अनुभव करेंगे। मानसिक और चिंतन शक्ति क्षीण होगी। इस कारण आपके दोस्त सोचेंगे कि आप में मानसिक परिवर्तन आ गया है। निवास स्थान से दूर की यात्रा संभव है। निम्न वृत्ति के लोग आप से काम कराकर लाभ उठाने की कोशिश करेंगे।

☀ (03-02-2031 >> 13-10-2033)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की अपेक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

☀ (13-10-2033 >> 22-11-2034)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शांति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीजें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

☀ (22-11-2034 >> 22-01-2038)

शनि की दशा में शुक्र के अंतर में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबंध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहदि मांगलिक कार्य होंगे।

☀ (22-01-2038 >> 04-01-2039)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबंधी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपनी नौकरी में निराश हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

☀ (04-01-2039 >> 04-08-2040)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्युतुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

☀ (04-08-2040 >> 13-09-2041)

शनि की दशा में मंगल के अंतर में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

☀ (13-09-2041 >> 20-07-2044)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में ऊँचाइयों से गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं के पास आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आध्यात्मिक और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेंगे।

☀ (20-07-2044 >> 31-01-2047)

शनि की दशा में बृहस्पति का अंतर आपके लिए अनुकूल रहेगा। अनेक संतुष्टिप्रद कार्य घटित होंगे। आपका परिश्रम और क्रियाशील स्वभाव आसानी से आपको फल की ओर ले जायेगा। कार्यशक्ति में वृद्धि होगी। अनपेक्षित स्थानों से आपको सहायता मिलती रहेगी। विवाहकार्य आयोजन का मौका मिलेगा। उन्नति और प्रगति का समय है।

बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। जमीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबंधी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। नए भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

सप्तवर्गीय गणित में बुध बलवान है। अधिकतर शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस दशा में अच्छी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का योग होगा। लिखना, पढ़ना, व्याख्यान (भाषण) देना आदि में पूरा समय लग जा सकता है। दूसरे लोग आपके अधिकार में रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में एक मध्यवर्ती होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। किसी वस्तु के उत्पादन के एजेंट होकर या किसी प्रकाशन से अच्छी आमदनी मिलने की संभावना है। मित्रों और रिश्तेदारों की सहायता मिलेगी। उत्तर की ओर यात्रा संभव है और खूब धन कमाने का योग है।



युवा लोगों के परिचय से भी अच्छा लाभ प्राप्त होगा। लेखन-प्रकाशन का काम भी लाभदायक रहेगा।

केतु दशा

31-01-2064 से प्रारंभ

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती है तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएँ आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछड़ना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शांति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबंध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

शुक्र दशा

31-01-2071 से प्रारंभ

पहले किए हुए अच्छे कार्यों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में हो जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल आपको मिलेगा। भिन्न भिन्न सवारियों से कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी आप के लिए बाधा बनेगी। संबन्धियों से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति भी अनुभव होगी। विवाह के योग्य आयु होने पर ही जीवन साथी चुनने का योग्य समय माना जा सकता है। पत्नी समेत आनन्दमय जीवन व्यतीत होगा। आयु अनुसार सुखद दांपत्य जीवन और संतान प्राप्ति का योग है। दुष्ट व चरित्रहीन व्यक्तियों से दूर रहना ही उचित होगा। सम्मान मिलेगा।

शुक्र बलवान् स्थिति धारण किये हुए है। इस कारण अनेक शुभ फल प्राप्त होने की संभावना है। सुख व यश में वृद्धि होगी।

जन्म कुंडली में मालव्य योग बना है। इस कारण आप भाग्यशाली माने जाते हैं। मालव्य योग में लिखित अनेक शुभ फल इस दशा में प्राप्त होंगे।

अपना जीवन आनन्दमय बनाने के लिए कलात्मक वस्तुओं को इकट्ठा करने में आपको विशेष रुचि होगी। इस दशा में दूसरों की सहायता से सफलता प्राप्त होने की अपेक्षा रखनेवाले हैं। मन बहलाने वाली प्रेममय घटनाएँ होंगी। परिवार में विवाह आदि त्योहार मनाया जायेगा। औरतों के सहयोग से आपकी उन्नति होगी। अनुराग, प्रीति, वात्सल्य और मृदुल भाव मानसपटल पर उभरेंगे।

जन्म कुण्डली में शुक्र के संग शत्रु ग्रहों का सहवास होने से संपूर्ण शुभ फलों से वंचित रहना पड़ेगा। परंपरा से भिन्न प्रकार की मित्रता हो सकती है। सतर्क रहें लाभदायी होगा।

मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। गुप्त रोगों का शिकार बनना पड़ जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण में क्षीणता उत्पन्न होगी। लैंगिक शक्ति दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती हुई दिखाई देगी। अपमान और धन नाश नीच मित्रों के माध्यम से हो सकता है। इस कारण सावधानी से हर कदम उठाना बुद्धिगम्य माना जायेगा। जहाँ से आशा की प्रतीक्षा रखेंगे वहाँ निराशा ही उपलब्ध होगी। जिन से मदद की आशा होगी वे विरुद्ध व्यवहार करेंगे। संक्षेप में सहयोग और सहानुभूति का अभाव दिखाई देगा।



ग्रह दोष और उपाय

मांगलिक दोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है। मंगल या कुज का विवाह संबंधी विषयों तथा गुणमेलन आदि के विश्लेषण में बहुत महत्व है। सामान्य तया जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें या द्वादश भाव में हो तो मंगल दोष माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों में मंगल के प्रभाव को बताते हुए अनेक नियमों का संग्रह दिया गया है। उन नियमों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका दुष्प्रभाव कुछ कारकों से क्षीण हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्तृत रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में दशम स्थान पर है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की स्थिति के अनुसार मंगलदोष का विश्लेषण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

उपचार

यदि आपकी कुंडली में कुज दोष नहीं हैं आपको किसी तरह के कोई उपायों को करने की जरूरत नहीं है।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह हैं। उनकी गति परस्पर संबंधित है और एक ही अंग के भाग होने के कारण दोनों हर समय वह एक दुसरो के विरुद्ध होते हैं, किन्तु दृष्टि से विचार करते हुए, वह एक दुसरो से संबंधित है।

सामान्य रूप से, राहु सकारात्मक है और गुरु के प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद के लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनी के विघ्न को दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इस प्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतिकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतिकवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी के लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपके परिवार की प्रतिष्ठा और सुख पुरी तरह से आपके प्रयासों पर निर्भर है। आप कोई भी जित स्वीकृति के लिए नहीं करते अपने सुखी जीवन के लिए आप खुद का व्यक्तित्व बनायेंगे और मेहनत करेंगे। आपको पैसा और संबंध चुनने के बारे में ध्यान देने की जरूरत है। निजी सुख के उपर ज्यादा ध्यान देना आपके पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपका विचारपूर्ण और उचित स्वभाव आपको चुनौतियों का सामना करने के लिए मदद कर सकता है। आप बुरी स्थिति पर सफलता प्राप्त करने हेतु सक्षम है और पारिवारिक सदस्यों से आदर प्राप्त कर सकते हैं। आपको कम मात्रा में रोग रहते हैं और आप निरोगी जीवन बिता सकते हैं। अपने सुखी जीवन पर लोभ और गुस्से का प्रभाव न पड़ने दें।

राहु दुर्बल होने से आपको आपकी पसन्द, स्वास्थ्य और संबंध के उपर ध्यान रखने की आवश्यकता है।

आपकी जन्मकुंडली में लाभदायी ग्रह गुरु राहु के साथ है। वह उपर दिये गये लाभ बढ़ाता है और अशुभ प्रभाव कम करता है।

राहु दोष के उपाय

राहु के अशुभ परिणाम कम करने हेतु, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

सर्पयंत्र लेकर समर्पित भाव से पहनें।

वैदिक प्रतिष्ठा पद्धती से नवग्रह देवता की रचना करके काली दाल लेकर उसका राहु को भोग दिखाएँ। (दक्षीण-पश्चिम दिशा में बैठकर चेहरा पूर्व दिशा में रखें)

कुछ प्रमाण में छिलको वाली काली दाल लें और उसे सोने से पहले तकिये के निचे रख दें। आपको उस दाल को सुबह सिर के चारों ओर गोल घुमाकर कौवे को डालना चाहिए। यह लगातार ९ दिन करें, और १० वे दिन भगवान शिव या देवी के मंदिर में स्वेच्छ से दान करके दर्शन लें।

कुछ मंदिरों में बरगद का पेड़ और निम का पेड़ लगा मिलता है, और उसके पास नाग देवता होते हैं। ऐसे देवता को हलदी का अभिषेक करके परिक्रमा करें।



सुहृदमण्यम स्वामी को बेल पत्री अर्पण करें।

जीवन में राहु का परिणाम कम करने हेतु हररोज निचे दिया गया श्लोक पढ़ें।

Asmik Mandale Adhidevatha
Prathyadhidevatha Sahitham Rahugraham
Dhyaayaami Aavahayaami.

Shreem Om Namō Bhagavathi Shree Shoolini
Sarva Bhootheswari Jwala Jwalamayi Suprada
Sarva Bhoothaadi Doshaya Doshaya
Rahur Graha Nipeedithaath Nakshathre
Rashou Jaatham Sarvaanaam Mam
Mokshaya Mokshaya Swaha.

आस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रत्याधिदेवता सहिथम राहुग्रहम
ध्यायामी अवहयामि.

श्री ॐ नमो भगवती श्री शूलिनि
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायि सुप्रदा
सर्व भुतादि दोषाया दोषाया
राहुर ग्रह निपीदितात नक्षत्र
राशोउ जाथम सर्वनाम माम
मोक्षया मोक्षया स्वाः

केतु दोष

आप नियंत्रीत खर्चा करके सुखी जीवन बिता सकते हैं। दृढता से और सावधता से आपका जीवन स्तर सुधारेगा और नुकसान से बचाव होगा। किसी भी चिंता का आपके विचार और कार्यक्षमता पर परिणाम न होने दे। आप कभी-कभी पारिवारिक समस्याओं पर निराश हो सकते हैं और परिवार सदस्यों के खर्च पर नियंत्रण रख सकते हैं। बुरी संगत और परिणाम से आपका अपमान होगा। आप निजी सुख का जितना कम विचार करेंगे उतना ही आपके परिवार का सुख बढ़ेगा। खाने की अच्छी आदतें और प्रोस्ट्रेट भाग का ज्यादा ध्यान रखने से आपका स्वास्थ्य सुधारेगा।

लाभदायी ग्रह गुरु का आपकी जन्मकुंडली पर प्रभाव है, जो ऊपर दिये गये लाभ बढ़ाता है और अशुभ प्रभाव कम करता है।

केतु दोष हेतु उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतु, आप निचे दिये उपाय कर सकते हैं।

सफेद कपड़े की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखें। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार ९ दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में जाकर शाम के समय दर्शन लें। स्वेच्छ से दान करके परिक्रमा करें।

केतु कवच यंत्र लेकर समर्पित भाव से पहने।

केतु के लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान। उनके मंदीर में दर्शन लेकर स्वेच्छ से दान करें।

घर में सुदर्शन चक्र रखें और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतु निचे दिया श्लोक पढ़ें।

Asmik Mandale Adhidevatha
Prathyadhidevatha Sahitham
Kekeegraham Dhyaayaami Aavahayaami.

Shreem Om Namō Bhagavathi Shree Shoolini
Sarva Bhootheswari Jwala Jwalamayi Suprada
Sarva Bhoothaadi Doshaya Doshaya
Kethur Graha Nipeedithaath Nakshathre
Rashou Jaatham Sarvaanaam Mam
Mokshaya Mokshaya Swaha.

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहितम
केकीग्रम धयायामि आवाहयामी

श्री ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः



परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति राहु है। यद्यपि आप जान बूझकर बातें करना पसंद करते हैं, आप विरले ही अपने अनुमानों को बदलेंगे। यह आपके लिए योग्य प्रसिद्धि को आप तक पहुँचाने के लिए रुकावट बन जाएगा।

जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ ग्रहों की दशा आपके लिए प्रतिकूल होगी। आर्द्रा नक्षत्र होने के बावजूद शनि केतु और सूर्य दशा में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस समय आपके विचारों और कार्यों में कम दृढ़ता ही होगी। आप उन लोगों से पूर्ण विश्वसनीय नहीं हो सकते जिन्होंने आपके आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता की हो। कभी कभी आप दूसरों के गलतियों को सूचित करने से खुद को रोक नहीं सकते। घरेलु जीवन में अपने रुचि और अरुचि का संयम रखना पड़ेगा।

मिथुन जन्म राशी का अधिपति बुध ग्रह है। इसलिए विधा संबंधी और दोस्ती के बारे में व्यक्त अनुमान प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहना चाहिए। जीवने के ऊँचाई और नीचाई को सुलझाने में मुसीबत होगी। पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और मृगशिरा नक्षत्र सामान्य रूप से अनुकूल नहीं होंगे।

इस प्रतिकूल दशा में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्ध नक्षत्रों पर अनावश्यक झगड़ों से दूर रहने की कोशिश करें। इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादाओं का प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते हैं।

इस प्रतिकूल दशा में राहु और सर्प देव की प्रार्थना करना लाभदायक होगा। श्रेष्ठ प्रत्याशी के लिए जन्म नक्षत्र आर्द्रा और संबंधित नक्षत्र जैसे स्वाती और शताभिषा नक्षत्र के दीवस पर सर्प देव की प्रार्थना करनी चाहिए।

अच्छा परिणाम पाने के लिए नक्षत्र के अधिपति, राहु की पूजा करनी चाहिए। सर्पाधिपति को प्रसन्न करने के लिए हल्दी, अनभस्स आदि के पैधों को लगाना चाहिए। काले और नीले रंग के वस्त्रों को पहनने से आप राहु को प्रसन्न कर सकते हैं।

इसके अलावा बुध ग्रह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य लाभदायक है।

आर्द्रा नक्षत्र के देव भगवान शिव हैं। शिव भगवान को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र का विश्वास से अलापन करना चाहिए।

1 ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उत्तोत

इषवे नमः

बाहुभ्यामुत् ते नमः

2 ॐ रुद्राय नमः

इसके अलावा, जानवरों, पक्षियों और पेड़ों का संरक्षण करना शुभकारक है। मुख्यतः आर्द्रा नक्षत्र के जानवर कुतिया का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपको जीवन में ऐश्वर्य और समृद्धि प्राप्त होगी। आर्द्रा का औद्योगिक पेड़, अभनस्स पेड़ और उसके शाखाओं को काटना नहीं चाहिए और औद्योगिक पक्षी, चकोर पक्षी को पीड़ा नहीं देनी चाहिए। आर्द्रा नक्षत्र का मूलतत्त्व जल है। जल देव की पूजा करनी चाहिए और देवों का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए जल को दूषित करने वाले कार्यों से दूर रहना चाहिए।

दशा परिहार

दशा के अशुभ प्रभावों का परिहार

हर ग्रह की दशा में भाग्य और दुर्भाग्य के सामान्य प्रभाव जन्मकुंडली में स्थित ग्रहों के स्थानों पर आधारित है। शुभ और अशुभ ग्रहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कौनसा दशा-समय आपके लिए अनुकूल नहीं है। प्रतिकूल दशा-समय के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का अनुष्ठान करना पड़ेगा। जन्मकुंडली में स्थित प्रतिकूल दशा-समय और उसके लिए किए जाने वाली धार्मिक विधियों के विषय में यहाँ उल्लेख किया गया है।

दशा :गुरु

अभी आप गुरु दशा से गुजर रहे हैं।

दशा के अधिपति का अशुभ योग है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के आधार से गुरु दशा में प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पड़ेगा। गुरु यद्यपि समृद्धि प्रदान करने वाला ग्रह है फिर भी जब यह प्रतिकूल स्थिति में हो तो आपको अप्रत्याशित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्वास्थ्य के विषय में बिल्कुल भी लापरवाही ना करें। गुरु दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता गुरु के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। गुरु के प्रतिकूल स्थान में होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है।



जब गुरु कमजोर हो तो आपका ईश्वर से विश्वास भी कम हो जाएगा। दूसरों का काम जानबुझकर या अनजाने में आपको दुख पहुँचाएगा। इस समय आपको अपने क्रोध और संताप पर नियंत्रण रखना चाहिए।

इस समय आपका आशावादी बने रहना कठिन होगा। निराशा, चिन्ता और आत्मविश्वास की कमी सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगी। दोस्तों और रिश्तेदारों से बातचीत करते समय आपको स्वयं पर नियंत्रण करना चाहिए।

इस समय आपको जीवन में उर्जा की कमी महसूस होगी। आपका अतिव्यय वित्तीय कठिनाइयों को उत्पन्न करेगा। आपको कोमल व्यवहार को बनाए रखना चाहिए।

जब गुरु प्रतिकूल स्थान से हैं तो आपको स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से मधुमेह, कफ, यकृत और गले से संबंधित व्याधियों के प्रति अधिक सचेत रहना होगा। आपका वजन कम हो सकता है।

अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि गुरु प्रतिकूल है। यहाँ निर्देशित उपायों को करने से आप गुरु के दुष्प्रभाव से मुक्ति पाकर सुखी हो सकते हैं।

इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर गुरु के प्रतिकूल होने से इसकी शांति के लिए जिन उपायों को करना चाहिए उनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

वस्त्र

गुरु ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको गुरुवार में पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए।

जीवन शैली

गुरु की दशा में आपकी जीवनशैली गुरु के स्वभाव के अनुरूप होनी चाहिए। भगवान में विश्वास और अपने आशावादी स्वभाव को छोड़ना नहीं चाहिए। मानवीय मूल्यों को छोड़ना नहीं चाहिए। मानवीय मूल्यों को महत्व देना चाहिए। अपनी कुशलता और दोस्तों की सहायता से समाज सेवा करना चाहिए। अपने रिश्तेदारों को प्यार करना चाहिए और उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। अपने शब्दों और वचन को निभाने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। अपनी वित्तीय स्थिति से खुद को अवगत रखें। आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करना और दूसरों के साथ बाँटना लाभदायक है। हमेशा जीवन के सकारात्मक पक्ष को देखना चाहिए। गुरुवार को शारीरिक एवं मानसिक पवित्रता कायम रखनी चाहिए। अपने गुरु का आदर करना चाहिए और उनकी शिक्षा को मानना चाहिए।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थ के उपयोग में क़िफ़ायत करने के आचरण का ध्योतक है। उपवास रखना और व्रतादि अनुष्ठानों का पालन करने का सर्वोपरि लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। गुरु को अनुकूल करने के लिए आपको गुरुवार को उपवास रखना चाहिए। इस समय विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए और अपने योग्यता के अनुसार दान करना चाहिए। उपवास के समय मदिरापान, मासाहारी पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में प्राकृतिक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन पचाने के लिए सहायक है। उनका उपयोग करना चाहिए। अनाज, तलेपदार्थ, गरम और खट्टे खाद्य पदार्थ टालने चाहिए। आप अंशतः या पूरी तरह अशुभ प्रभावों की तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है। आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और विष्णु भगवान के मंदिर में जाना चाहिए। व्यवहार में संयम रखेंगे। गुरु की शान्ति हेतु आपको गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। स्वेच्छ से दान धर्म करें। भोजन की सात्विकता और पवित्रता का ध्यान रखें।

दान

स्वेच्छ से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का श्रेष्ठ मार्ग है।

गुरु को अनुकूल करने के लिए दाल, पीला माणिक्य, हलदी, जूट, नींबू, सोना, नमक, शक्कर आदि को दान देना लाभदायक है।

रूपर दिए गए परिहार का 31-1-2028 तक आचरण करना चाहिए।

दशा :शनी

आपकी शनी दशा 31-1-2028 को शुरू होती है।

आपका जन्म नक्षत्र आर्द्रा है। शनी पांचवा भाव में है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के अनुसार, आपको शनी दशा में प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पड़ेगा। आपको अप्रत्याशित रुकावटों तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते। अनावश्यक परेशानी आपकी नींद में बाधक होगी।

शनी दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता शनी के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। शनी के प्रतिकूल स्थान में होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है।

जब शनी कमजोर हो तो, अक्सर जीवन में आने वाली समस्याओं का धैर्यपूर्वक सामना करना चाहिए। जरूरी नहीं है की हमेशा आपकी अपेक्षा और आशा के अनुरूप हर काम हो जाये इसलिये कई बार आपको वित्तीय परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है।

इस समय बुजुर्गों के साथ आपके सम्बंधों में तनाव आ सकता है। सामान्य रूप से आपके सामाजिक व्यवहार में उर्जा की कमी महसूस होगी। भोजन पोषक और स्वस्थ्यवर्धक हो इसका ध्यान रखें।

इस समय रोगों के प्रतिरोध की शक्ति अत्यंत प्रभावित होगी। आप रोगों से जल्दी छुटकारा नहीं पा सकेंगे। शनी के बुरे प्रभाव से आपको शारीरिक



व्याधियों से जूझना पड़ सकता है।

जब शनी प्रतिकूल स्थिति में हैं आपकी विचारशक्ति और संयम पर बुरा असर पड़ेगा। आपको अनावश्यक मानसिक परेशानियों से दूर रहना चाहिए। अगर आप इस प्रकार के समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि शनी प्रतिकूल है। जिन लोग इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं उन्हें शनी को अनुकूल करने के कुछ उपाय अपनाना चाहिए। शनी को अनुकूल रखने से आपको उसके अशुभ प्रभावों को कम करने का प्रयत्न कर जीवन सुखद बनाना चाहिए।

इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनी के प्रतिकूल होने से इसकी शांति के लिए जिन उपायों को करना चाहिए उनका विवेचन यहाँ किया जा रहा है।

वस्त्र

नीला और काला रंग शनी को प्रिय है। इन रंगों के वस्त्र पहनने से शनी ग्रह को अनुकूल किया जा सकता है। अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए।

देव पूजा, आराधना, उपासना

शनी दशा के अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए भगवान शिव और श्री अय्यप्पास्वामी की पूजा करनी चाहिए। कुछ शास्त्रों ने भगवान हनुमानजी की पूजा करने को कहा है। केरल के ज्योतिषि भगवान अय्यापा की उपासना की सलाह देते हैं। काला या नीला वस्त्र पहनकर व्रत लेकर अय्यप्पास्वामी के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल के मधुर रस से अभिषेक; शनी ग्रह को अनुकूल करने का मार्ग है।

प्रातःकालीन प्रार्थना

प्रातःकालीन प्रार्थना अशुभ प्रभावों को दूर करने के साथ-साथ आपके मन तथा शरीर को नयी ऊर्जा प्रदान करता है। चन्द्र दशा में हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। अपने शरीर को शुद्ध करने के बाद शनी की अनुग्रह की याचना करें। मन से सभी चिन्ताओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय
कृष्णाय, वासुदेवाय नमामि हरये सदा
मन्दस्यानिष्टसभुतम् दोषजातम् विनाश्ये (इस प्रार्थना को भी आलापन करें)

इस प्रार्थना को हर दिन नींद से उठते ही शाय्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में क़िफ़ायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन है। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए।

ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिद्ध मने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित है। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भारी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात् वार को उपवास रखना चाहिए। संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्य का पालन करें। उपवास का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए।

शनी को अनुकूल करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए। आपको शनी मंदिर या हनुमानजी के मंदिर में दर्शन करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। इस समय श्री अय्यप्पास्वामी के मंदिर में जाकर अपने योग्यता के अनुसार दीप और इल्लू पायस का दान करना चाहिए। उपवास के समय मदिरापान, मांसाहारी पदार्थ और मादक चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए। इन दिनों में सात्विक खाद्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जिन पचने में आसान हों उनका सेवन करना चाहिए। अनाज, तलेपदार्थ, गरम और खट्टे खाद्य पदार्थ टालने चाहिए। आप अंशतः या पूरी तरह अशुभ प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते हैं। उपवास के समय धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है। आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और व्यवहार में संयम रखेंगे। उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। शनी ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको शनिवार में उपवास रखना चाहिए। इस समय श्री अय्यप्पा भगवान के मंदिर में दर्शन, भगवान के लिए दिया जलाना और तिल का मधुर रस से अभिषेक आदि उचित हैं। शनिवार के दिन पीपल के पेड़ की परिक्रमा करना लाभदायक है। समय उपवास रखते समय अय्यप्पा मंदिर में दर्शन करना चाहिए। उपवास के समय मदिरा, मांस पदार्थ और मादक करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए।

दान

स्वेच्छसे से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का का श्रेष्ठ मार्ग है।



शनी ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनी का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए। गरीबों को भोजन दान देना उचित है। एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए। इससे अच्छा फल प्राप्त होगी।

पूजा

शनी को अनुकूल करने के लिए कुछ पूजा विधियों का निर्देश किया है। नीलकमल, या नीला जपाकुसुम आदि से शनी पूजा किया जाता है। तिल और उड़द से अभिषेक भी किया जाता है। नव ग्रहों के मंदिर में दर्शन करना, शनी ग्रह को नील कमल से आभूषित करना और दिया जलाना लाभदायक है। निपुण ज्योतिषियों के मार्गदर्शन के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए।

मन्त्रों का जाप

जो लोग अनुष्ठान यज्ञ आदि कर्म किसी कारणवश करने में असमर्थ हों वे निम्न मन्त्रों का पाठ कर शनी के दोष का परीहार कर सकते हैं और शनी का अनुग्रह और कृपा जीत सकते हैं।

ॐ सूर्यपुत्राय विहमहे

शनैश्चराय धीमहि

तन्नोः मन्दः प्रचोदयात्

अत्यंत विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का जाप करने से ही आपको फल सिद्धी प्राप्त होगी।

शनी ग्रह का मौलिक मंत्र

शनी को प्रसन्न करने के लिए शनी के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

ॐ शनैश्चराय नमः

ॐ शान्ताय नमः

ॐ सर्वाभिष्ट प्रदायिने नमः

ॐ शरण्याय नमः

ॐ वरेण्याय नमः

ॐ सर्वेशाय नमः

ॐ सौम्याय नमः

ॐ सुरवन्द्याय नमः

ॐ सुरलोक विहारिणे नमः

ॐ सुखासनोपविष्टयान नमः

ॐ सुन्दराय नमः

ॐ मन्दाय नमः

अंगुलिक यंत्र

अंगुलिक यंत्र ग्रहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है। बुध को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अंगुलिक यन्त्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

12	7	14
13	11	9
8	15	10

इस यन्त्र को विशुद्ध मन से पहनने से अशुभ प्रभावों का दूर किया जा सकता है और यह आपके मन को एक नई ऊर्जा प्रदान करता है। यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहते हैं तो आप इसको एक कागज के तुकड़े पर लिखकर अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबल पर रखना चाहिए।

रूपर दिए गए परिहार का 31-1-2047 तक आचारण करना चाहिए।

दशा : बुध

आपकी बुध दशा 31-1-2047 को शुरू होती है।

बुध बारहवाँ भाव में है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस जन्मकुंडली की ग्रहस्थिती के आधार पर बुध दशा आपके लिए प्रतिकूल होगी। इस समय आपको अनअपेक्षित समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अपनी बातचीत और भाषा पर नियंत्रण करना चाहिए। महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय ध्यान रखना चाहिए।

बुध दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। बुध के प्रतिकूल स्थान से होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है।



जब बुध कमजोर होतो आप अपने कार्यक्षेत्र में अपेक्षित सफलता नहीं पा सकते। उत्सव या मंगल कार्यों में अप्रत्याशित रुकावट आने की संभावना है। इस समय तर्क संगत निर्णय लेने और उनका अवलंबन करने में आपको देरी लगेगी। अपने कार्यक्षेत्र में आपको सहायता की आवश्यक पड़ेगी। सब कुछ आपकी इच्छा के अनुसार नहीं होगा। राजनैतिक निर्णयों को लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए।

व्यक्तिगत संबंधों का निर्वाह आपको कठिन लगेगा। आपके शब्द और कर्म एक दुसरे से विपरीत होंगे। सबकुछ आपकी इच्छानुसार नहीं होगा। नैतिक निर्णय लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि बुध प्रतिकूल स्थान से स्थित हैं। जिन लोग इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं उन्हें बुध को अनुकूल करने के लिए कुछ उपाय करने चाहिए। बुध को अनुकूल रखने से उसके अशुभ प्रभावों को कम करके जीवन सुखमय किया जा सकता है।

इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर बुध दशा में जिन विशिष्ट प्रयत्न करने चाहिए उसके विषय में यहाँ समाधान प्रस्तुत किया गया है।

वस्त्र

हरा रंग बुध ग्रह का प्रिय रंग है। इसलिए बुध ग्रह को अनुकूल करने के लिए हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। बुधवार को और बुध ग्रह की पूजा करते समय हरे रंग का वस्त्र पहनना उचित है।

जीवन शैली

बुध दशा में आपकी जीवनशैली बुध के स्वभाव के अनुरूप होनी चाहिए। बुध अपने नाम के अनुसार बुद्धि तथा ज्ञान को संचालित करता है। अपने जीवन में इस ग्रह के अनुरूप परिवर्तन करने से आप इस के दुष्परिणामों से काफी हद तक बच सकते हैं। इस काल में आपको उच्चविचारों और कार्यों में स्वयं को व्यस्त रखना होगा। शैक्षणिक अनुशासन, जैसे स्वाध्याय, लेखन, वाचन आदि कार्यों में रुचि लेकर आप नीच के बुध के अशुभ प्रभावों को बहुत हद तक कम कर सकेंगे। इस समय आप अपने ज्ञान के नए आयाम तथा वक्तव्यकला को बहुत विकसित कर सकेंगे। पुराण आदि धर्म ग्रंथों का पाठन और महापुराणों के आख्यान सुनकर अपनी प्रतिभा को और निखार सकते हैं।

प्रातःकालीन प्रार्थना

प्रातःकालीन प्रार्थना अशुभ प्रभावों को दूर करने के साथ-साथ आपके मन और शरीर को नयी ऊर्जा प्रदान करती है। शुक्र दशा में हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। अपने शरीर को शुद्ध करने के बाद शुक्र से अनुग्रह की याचना करें। मन को सभी चिन्ताओं से मुक्त कर एकाग्रता से प्रार्थना करनी चाहिए।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यम नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्ठजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते
सोमजानिष्ठसभुतम् दोषजातम् विनाश्य

प्रातःकालीन प्रार्थना न केवल ग्रहों के अशुभ प्रभाव को नष्ट करती है साथ ही शरीर और मन को नयी चेतना तथा ऊर्जा प्रदान करती है। शचिभूत होकर एकाग्रता से पूजा करने से मंगल की दशा के अनिष्ट प्रभाव का विमोचन होता है।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में क्वायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन है। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए।

ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिद्ध माने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित हैं।

उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भरी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है।

ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात् वार को उपवास रखना चाहिए संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्य का पालन करें। उपवास का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। अपने लिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए।

बुध को अनुकूल करने के लिए आपको बुधवार में उपवास रखना चाहिए। आपको बुधवार को शिव भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। पौंगल (सूर्य मेष राशी में भगवान का पूजन करना, देवियों को दही और गुड़ के साथ पकाए गए चावल को दान करना लाभदायक है। आपको शिव भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए तथा अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। उपवास के समय मदिरा, मांस पदार्थ और मादक करने वाली चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए।



ऊपर दिए गए परिहार का 31-1-2064 तक आचारण करना चाहिए।

दशा :केतु

आपकी केतु दशा 31-1-2064 को शुरू होती है।

आपका जन्म नक्षत्र आर्द्रा है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस कुंडली की ग्रह स्थिति के आधार पर केतु ग्रह की दशा में आपको कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। इस अवधि में आपकी अंतर चेतना तथा कल्पनाशक्ति बुरी तरह प्रभावित होगी आपके हर उपक्रम की सफलता के प्रति एक डर सा बना रहेगा। आपकी एकाग्रता और कार्यक्षमता दोनों का ह्रास होगा।

केतु दशा के अशुभ प्रभावों की तीव्रता केतु के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। जब केतु प्रतिकूल स्थान से हैं जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ कहा गया है। यदि केतु कमजोर हो तो आपके निर्णय नकारात्मक और इनमें विरोधाभास हो सकता है। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आपको दूसरों पर निर्भर रहना पड़ेगा। आत्मरक्षा के प्रति आपको सचेत रहना होगा। आप इस समय भुतकाल में जीना पसंद करेंगे। अपने कार्य कलापों को अपने तक सिमित रखने का प्रयत्न करें। ज्वर आदि व्याधियों के होने की संभावना है। आंव और पचनसंस्थान संबंधी बीमारियों के प्रति सचेत रहें विशेष रूप से यात्रा के समय खान पान का ध्यान रखें।

जब केतु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको दूसरों की जायदाद में रुचि बढ़ सकती है। वैवाहिक जीवन सुचारु रखने के लिए आपको संघर्ष करना पड़ेगा। अगर आप इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि केतु प्रतिकूल है। जो इस प्रकार कि समस्या के अधीन हों उन्हें केतु को अनुकूल करने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए। केतु को अनुकूल रखने से उसके अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है और जीवन सुखमय हो सकता है।

इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर केतु दशा में जिन विशिष्ट उपायों का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ विवेचन किया गया है।

वस्त्र

लाल रंग के वस्त्र पहनने से केतु को शान्त किया जा सकता है। आप काले रंग का वस्त्र भी पहन सकते हैं। मंगलवार में आपको लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए। पूजा करते समय काला और लाल रंग का वस्त्र पहनना उचित है।

जीवन शैली

केतु की दशा में आपकी जीवनशैली केतु के स्वभाव के अनुरूप होनी चाहिए। केतु की दशा में आपका सैधान्तिक ज्ञान और आध्यात्मिक जीवन शैली आपके मन को केतु दशा की समस्याओं से बचाने के लिए सहायक होगी। विद्वान् लोगों के मार्गदर्शन और निर्देशों को स्वीकार करना चाहिए। यह आपकी मानसिक उर्जा को बढ़ाने के लिए सहायक होगी। प्रलंबित किए गए धार्मिक अनुष्ठानों को फिर से शुरू करना, मन्त्रों को पढ़ना, ध्यान धारणा के लिए कुछ समय व्यय करना और क्रमबद्ध जीवन शैली का पालन करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अपने परिवार के अन्दर या बाहर के लोगों कलह से बचें। रियायत या छूट देने में हिचकना नहीं चाहिए। वाहनों में जाते समय ध्यान रखना चाहिए। पूजा - पाठ या परिहार कर्म करते समय आपका स्थिति होना बहुत आवश्यक है।

देव पूजा, आराधना, उपासना

केतु दशा के अशुभ प्रभावों को दूर करने के लिए गणेश भगवान का पूजन करना चाहिए। अपने जन्म नक्षत्र में गणेशजी का होम करना, व्रत लेकर चतुर्थी तिथि को गणेश मंदिर में दर्शन, गणेश भगवान का स्तुतिगान करना आदि अनुष्ठानों से केतु दशा के अशुभ प्रभावों को कम किया जा सकता है। कुछ ज्योतिषि चामुण्डा देवी की पूजा करने की सलाह देते हैं। जिनका केतू उच्च राशी में हैं उनको गणेश भगवान का और जिनका केतु नीच राशी में हैं उनको चामुण्डा देवी की पूजा करनी चाहिए।

दान

स्वेच्छ से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार और ग्रहों की शान्ति का का श्रेष्ठ मार्ग है।

केतु को अनुकूल करने के लिए आप बकरी, आयुध, हरितमणि, लाल या काला रेशम आदि दान किया जा सकता है। सोना, चाँदी या पंचधातु से बना मूर्ति दान देना लाभदायक है।

ऊपर दिए गए परिहार का 31-1-2071 तक आचारण करना चाहिए।

दशा :शुक्र

आपकी शुक्र दशा 31-1-2071 को शुरू होती है।

दशा के अधिपति का अशुभ योग है। इसलिए इस दशा में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा।

इस जन्मकुंडली की ग्रहस्थिति के आधार पर शुक्र दशा में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोगना होगा, इस समय कई अप्रत्याशित मुसीबतें आ सकती हैं। अपनी बोली पर नियंत्रण रखें। महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए। दूसरों के साथ मिलते - जुलते समय सावधान रहें।

शुक्र दशा के दुष्प्रभावों की तीव्रता गोचर में शुक्र के स्थान परिवर्तन से बदलती रहती है। शुक्र के प्रतिकूल स्थान से होने से जिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा वे इस प्रकार हैं।

नीच का शुक्र आपकी इच्छानुसार खुशी और संतुष्टि प्राप्त नहीं होने देता। लोगों और अन्य विषयों में आपकी रुचि बदलती रहती है। आप जिसके पात्र है



वह प्यार और विश्वास आपको नहीं मिल पायेगा। आपके कार्यों और वित्तीय गतिविधियों में भारी बदलाव आ सकते हैं। आपकी शुक्र दशा में विलासिता और भोग में दिलचस्पी बढ़ेगी। जब शुक्र ग्रह प्रतिकूल स्थान से हैं तो इस प्रवृत्ति की तीव्रता साधारण से भी अधिक होगी। इस समय आर्थिक व्ययों पर स्वयं नियंत्रण रखना चाहिए। इस समय अपने परिवार को अधिक महत्व और संरक्षण देना चाहिए। दूसरों से विशेष रूप से विपरीत लिंग के लोगों से मिलते जुलते समय सतर्क रहना चाहिए। यात्रा के समय या वाहन चलाते समय सावधान रहें। श्रमपूर्ण कार्यों में असाधारण रूप से आप थकान महसूस करेंगे। अगर आप उपरोक्त मुसीबतों का सामना कर रहे हैं तो यह समझना चाहिए कि शुक्र ग्रह प्रतिकूल स्थान से हैं। जो लोग इस प्रकार की कठिनाइयों को महसूस कर रहे हैं तो उन्हें शुक्र को अनुकूल कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए। शुक्र को अनुकूल करने के प्रयासों से अशुभ प्रभाव कम करने से जीवन सुखद हो सकता है। इस जन्मकुंडली के विस्तृत निरीक्षण के आधार से शुक्र दशा में जो विशिष्ट उपचार करने चाहिए उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

वस्त्र

उज्ज्वल रंग शुक्र ग्रह के लिए प्रिय है। आप शुक्र को शान्त करने के लिए सफेद या उदे रंग के वस्त्र पहन सकते हैं। इस समय गहरे और भड़क रंग का वस्त्र नहीं पहनना चाहिए। शुक्रवार को फीके रंग के कपड़े पहनना उचित है।

जीवन शैली

आपकी जीवन शैली शुक्र के स्वभाव के अनुरूप होनी चाहिए। अपने विचारों और कार्यों को सदाचार और सद्भावपूर्ण बनायें। स्वभाव को सयमित रखना चाहिए। दूसरों के साथ दया और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। आपके घर और उसके चारों ओर सफाई रखना चाहिए। इस समय साफ कपड़े पहनना चाहिए। दूसरों को दुख देने वाले वाक्यों का प्रयोग ना करें। विपरीत लिंग के लोगों से स्नेह और आदर का भाव प्रकट करना चाहिए। दूसरों को दुःख पहुँचाने वाले शब्दों का उपयोग ना करें। यौन विषयक विचारों को नियंत्रण में रखें। आप किसी पारिवारिक विवाहदि कार्यों में अवरोध लाने का प्रयास ना करें न किसी ऐसे व्यक्ति का साथ दें। विवाह आदि कार्यों में परिवार का साथ देना चाहिए। संगीत सुनने से शुक्र को शांत किया जा सकता है।

उपवास

उपवास खाद्य पदार्थों के सेवन में क़िफायत के अतिरिक्त पचनसंस्थान को स्वस्थ रखने के उद्देश से तथा धार्मिक आस्था से किया जाने वाला लंघन है। इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्ध करना। इसलिए विशिष्ट दिनों में और ग्रहों के अनुरूप दिनों में उपवास रखना चाहिए। ग्रहों के अनुकूलन के लिए किये जाने वाले उपवास में ठोस अन्न आदि खाद्य, मांसाहार, मदिरा सेवन, आदि निषिद्ध मने गए हैं अतः इनके सेवन वर्जित हैं। उपवास के दिन सौम्य, सात्विक आहार का सेवन करना चाहिए। अधिक तीखे, चटपटे, खट्टे, तथा पचने में भारी खाद्य उपवास में वर्जित माने जाते हैं। फलाहार तथा कुछ हलकी खाद्य सामग्री का सेवन किया जा सकता है। ग्रह को अनुकूल करने के लिए आपको ग्रह से संबंधित दिन अर्थात वर को उपवास रखना चाहिए संबंधित ग्रह के देवी या देवता के मंदिर में पूजा अर्चा उपवास का एक अंग है। उपवास में क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि से स्वयं को दूर रखें और ब्रम्हचर्य का पालन करें। शुक्र को अनुकूल करने के लिए शुक्रवार को उपवास करना चाहिये।

दान

स्वेच्छा से भिक्षा या दान देना अपने पापों के परिहार का श्रेष्ठ मार्ग है। शुक्र ग्रह को अनुकूल करने के लिए चाँदी से बना शुक्र का मूर्ति, अमारा विभिन्न रंग के रेशमी वस्त्र, सफेद गाय, सुगन्धित द्रव्य आदि को दान देना चाहिए। अन्नपूर्णशवरी देवी को अनुकूल करने के लिए भोजन दान देना लाभदायक है।

ऊपर दिए गए परिहार का 31-1-2091 तक आचारण करना चाहिए।



गोचर फल

नाम	: Arun Shah (पुरुष)
जन्म राशी	: मिथुन
जन्म नक्षत्र	: आर्द्रा
ग्रहस्थिती	: 19-अप्रैल-2023
अयनांश	: चैत्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है -

☀ (14-अप्रैल-2023 >> 14-मई-2023)

इस समय सूर्य ग्यारहवां भाव से संचार करेगा।

स्वयं के पुरुषार्थ के आधार पर प्रगति प्राप्त होगी। सफलता और विजय की श्रृंखला आपका साथ देगी। आप के परिचित और संबन्धी व्यापार के माध्यम से संपत्ति प्राप्त करेंगे। जुए और सट्टेबाजी में भाग लेने की मानसिक प्रेरणा उत्पन्न होगी। लाटरी में सफलता मिल सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से आरोग्य में सुधार होगा। सफलता के लिए यह समय चिरस्मरणीय हो सकता है।

☀ (14-मई-2023 >> 13-जून-2023)

इस समय सूर्य बारहवां भाव से संचार करेगा।

सूर्य अनुकूल नहीं हैं। अपने कार्य क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सहकर्मियों से या अपने समीप में रहनेवालों के प्रति सख्त व्यवहार करना पड़ेगा या कटु वचन कहना पड़ेगा। शारीरिक अस्वस्थता दूर करने का प्रयास करना पड़ेगा। व्यर्थ की लंबी यात्रा करनी होगी। लापरवाह रहने से तबियत पर बुरा असर पड़ने की संभावना है। मानसिक ग्लानि से मुक्त होने का प्रयास अनिवार्य बन पड़ता है। व्ययाधिक्य से बच पाना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

☀ (13-जून-2023 >> 13-जुलाई-2023)

इस समय सूर्य जन्म भाव से संचार करेगा।

आपने युवावस्था में प्रवेश किया है। मन और शरीर दोनों पूर्णता की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। विचारधारा, अभिलाषा और मनोभाव में परिवर्तन का अनुभव होगा। अनुकूल संजोगों के अनुसार हानि होना संभव है। निवास स्थान में, पढ़ाई में और प्रवृत्ति में परिवर्तन की संभावना है। प्रवृत्ति और यात्रा, दोनों को आकस्मिक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उस से बचना कठिन है। क्रोध पर नियन्त्रण रखना हर दृष्टि से हितकर होगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि में एक साल तक रहता है। गुरु के कारण मिलनेवाले फल की प्राप्ति अति प्रधान होती है।

☀ (14-अप्रैल-2022 >> 22-अप्रैल-2023)

इस समय गुरु दशम भाव से संचार करेगा।

अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। इन बातों से निराश होकर पीछे हठने वालों में से आप नहीं हैं। आप प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने वालों में से हैं। हर प्रतिकूल स्थिति में आत्मधैर्य रखकर आगे बढ़ने वालों में से हैं। हर प्रतिकूल स्थिति में आत्मधैर्य बना रखने वाले व्यक्ति हैं। आपकी इस कार्य शक्ति को देखकर लोग आश्चर्य चकित हो जायेंगे। सफलता सरलता से मिलनेवाली चीज नहीं है। उसको प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है। यह सत्य अनुभव से व्यक्त होगा, साथ ही दूसरों के लिये आप से मार्गदर्शन भी प्राप्त होगा। क्षमा और सहिष्णुता का अभाव कुछ समस्यायें पैदा कर सकती हैं। इन सभी से मुक्त होने से आप उत्तम पुरुष माने जायेंगे।

☀ (23-अप्रैल-2023 >> 1-मई-2024)

इस समय गुरु ग्यारहवां भाव से संचार करेगा।



अप्रत्याषित रूप से सफलता प्राप्त होगी। भाग्योदय के लिए अनुकूल समय है। आपके परिचित लोगों की यह मान्यता होगी। आपके हर आग्रह, लक्ष्य और सपने साकार होंगे। प्रेम पुष्प हृदय में खिलने की तैयारियाँ कर रहे हैं। आमदनी में, पद में आप स्थिरता का अनुभव करेंगे। आपकी सफलता का रहस्य आपका मनोबल है। वैवाहिक प्रस्ताव प्राप्त होंगे। यदि और विवाहित हैं तो संतानोत्पत्ति की आशा कर सकते हैं।

शनि का गोचर फल।

शनि का गोचर फल साधारण स्थिति में शनि से दुःखद अनुभव ही होता है। शनि के योग के कारण अस्वस्थ स्थिति उत्पन्न होती है। मन उद्वेग से भर उठता है। यह सब होते हुए भी कभी कभी अप्रत्याषित रूप से शनि अनेक लाभ भी प्रदान करता है। हर राशि के मध्य शनि ढाई वर्ष तक रहता है।

☀ (18-जनवरी-2023 >> 29-मार्च-2025)

इस समय शनि नवम भाव से संचार करेगा।

आप पुराने विचारों को नये पन में परिवर्तित करने के इच्छुक हैं। आधुनिक और नवीनीकरण की भी हद होती है। जब कोई भी बात हद से बाहर निकलती है तो उसके विपरीत असर से बचना मुश्किल होता है। निकृष्ट कार्यों के प्रति मन को अग्रसर न करें और जाग्रत रहें। अयोग्य मित्रों का सामीप्य दुःख की ओर ले जाता है। विवेकपूर्ण दृष्टि अनिवार्य है। कुछ हानि और कष्ट से बचना मुश्किल है। महुँगाई सहनी होगी। संक्षिप्त में शनि दशा अनुकूल नहीं है। महत्वपूर्ण व्यक्ति से अपने संबन्ध को स्थाई बनाने का अच्छा समय है। फिज़ूल के खर्च से बचना लाभदायक होगा।

☀ (30-मार्च-2025 >> 3-जून-2027)

इस समय शनि दशम भाव से संचार करेगा।

उन्नति के शिखर पहुँचने की बड़ी तमन्ना है। पौरुष और स्वास्थ्य में वृद्धि होगी। छोटे-छोटे कारणों को लेकर झगड़े उत्पन्न होंगे। मानसिक स्थिरता में कमी होने का भ्रम उत्पन्न होगा। सोचे-समझे बिना किसी भी कार्य में कूद पड़ना आपकी आदत है। इस आदत से कलंकित होने की संभावना रखते हैं। इसलिए जाग्रत रहना अनिवार्य है। कीर्ति और प्रशंसा प्राप्त होगी। विधार्थियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। साहित्यकारों के लिए भी यह समय अनुकूल न रहेगा। आप कण्टक शनि के प्रभाव में हैं। राजकीय अधिकारियों की अनुकूलता में कमी आने की संभावना है।



अनुकूल समय

उद्योग या व्यवसाय के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दशमेश, दशम भाव और लग्न में उपस्थित शुभ ग्रह, लग्न और दशम भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर दशाकाल / अपहर आदि के अध्ययन के बाद उचित और श्रेष्ठ समय ज्ञात किया जाता है।

15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहर	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	चंद्र	14-07-2009	13-01-2011	अनुकूल
गुरु	शनी	20-03-2014	01-10-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	01-10-2016	07-01-2019	अनुकूल
गुरु	केतु	07-01-2019	13-12-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	13-12-2019	13-08-2022	श्रेष्ठ
गुरु	सूर्य	13-08-2022	02-06-2023	अनुकूल
गुरु	चंद्र	02-06-2023	01-10-2024	श्रेष्ठ
गुरु	मंगल	01-10-2024	07-09-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	07-09-2025	31-01-2028	अनुकूल
शनी	शुक्र	22-11-2034	22-01-2038	अनुकूल
शनी	चंद्र	04-01-2039	04-08-2040	अनुकूल
शनी	गुरु	20-07-2044	31-01-2047	अनुकूल
बुध	शुक्र	26-06-2050	26-04-2053	अनुकूल
बुध	चंद्र	02-03-2054	02-08-2055	अनुकूल

गुरु के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके करियर के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ठ
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ठ
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ठ
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ठ
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल



काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ठ
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ठ
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ठ
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ठ
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ठ
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ठ
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ठ
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ठ
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ठ
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ठ
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ठ
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
28-08-2049	08-03-2050	श्रेष्ठ
03-04-2050	19-09-2050	श्रेष्ठ
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल



विवाह के लिए अनुकूल समय

सप्तमेश, सातवें भाव में उपस्थित ग्रह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति की दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर वर्तमान दशा और अपहरादी के समय का निरूपण कर विवाह के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता है।

18 उम्र से लेकर 30 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
गुरु	शनी	20-03-2014	01-10-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	01-10-2016	07-01-2019	अनुकूल
गुरु	केतु	07-01-2019	13-12-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	13-12-2019	13-08-2022	श्रेष्ठ
गुरु	सूर्य	13-08-2022	02-06-2023	अनुकूल
गुरु	चंद्र	02-06-2023	01-10-2024	श्रेष्ठ
गुरु	मंगल	01-10-2024	07-09-2025	श्रेष्ठ

गुरु के विविध घरों में विशेष रूप से सप्तम भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके विवाह के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ठ
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ठ
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ठ
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ठ
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल



व्यापार के लिए अनुकूल समय

द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश पर गुरु की दृष्टी बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवें भाव पर बृहस्पति का दृष्टि, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर व्यापार के लिए अनुकूल और श्रेष्ठ समय को ज्ञात किया जाता है।

15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहर	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
राहु	चंद्र	14-07-2009	13-01-2011	अनुकूल
राहु	मंगल	13-01-2011	31-01-2012	अनुकूल
गुरु	शनी	20-03-2014	01-10-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	01-10-2016	07-01-2019	श्रेष्ठ
गुरु	केतु	07-01-2019	13-12-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	13-12-2019	13-08-2022	श्रेष्ठ
गुरु	सूर्य	13-08-2022	02-06-2023	श्रेष्ठ
गुरु	चंद्र	02-06-2023	01-10-2024	श्रेष्ठ
गुरु	मंगल	01-10-2024	07-09-2025	श्रेष्ठ
गुरु	राहु	07-09-2025	31-01-2028	अनुकूल
शनी	बुध	03-02-2031	13-10-2033	अनुकूल
शनी	शुक्र	22-11-2034	22-01-2038	अनुकूल
शनी	सूर्य	22-01-2038	04-01-2039	अनुकूल
शनी	चंद्र	04-01-2039	04-08-2040	अनुकूल
शनी	मंगल	04-08-2040	13-09-2041	अनुकूल
शनी	गुरु	20-07-2044	31-01-2047	अनुकूल
बुध	केतु	29-06-2049	26-06-2050	अनुकूल
बुध	शुक्र	26-06-2050	26-04-2053	श्रेष्ठ
बुध	सूर्य	26-04-2053	02-03-2054	श्रेष्ठ
बुध	चंद्र	02-03-2054	02-08-2055	श्रेष्ठ

गुरु के विविध घरों में विशेष रूप से एकादश और द्वितीय भावों से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके व्यवसाय के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
21-12-2009	02-05-2010	अनुकूल
02-11-2010	06-12-2010	अनुकूल
09-05-2011	17-05-2012	अनुकूल



काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ठ
13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ठ
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ठ
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ठ
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ठ
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ठ
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ठ
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ठ
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ठ
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ठ
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ठ
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ठ
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ठ
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ठ
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ठ
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल



काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
28-08-2049	08-03-2050	श्रेष्ठ
03-04-2050	19-09-2050	श्रेष्ठ
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल

ग्रह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथे भाव के अधिपति, चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि, चौथे भाव के स्वामी की गोचर स्थिति, इत्यादि विषयों को ध्यान में रख कर दशा अंतरदशा और अन्य बातों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त गृह निर्माण, निर्माणारंभ, द्वार की दिशा, मुख और चौखट आदि के मुहूर्त और समय ज्ञात किये जाते हैं, और निर्माण के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता है।

15 उम्र से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण।

दशा	अपहर	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
गुरु	शनी	20-03-2014	01-10-2016	श्रेष्ठ
गुरु	बुध	01-10-2016	07-01-2019	अनुकूल
गुरु	केतु	07-01-2019	13-12-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	13-12-2019	13-08-2022	अनुकूल
गुरु	सूर्य	13-08-2022	02-06-2023	अनुकूल
गुरु	चंद्र	02-06-2023	01-10-2024	अनुकूल
गुरु	मंगल	01-10-2024	07-09-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	07-09-2025	31-01-2028	अनुकूल
शनी	बुध	03-02-2031	13-10-2033	अनुकूल
शनी	केतु	13-10-2033	22-11-2034	अनुकूल
शनी	शुक्र	22-11-2034	22-01-2038	अनुकूल
शनी	सूर्य	22-01-2038	04-01-2039	अनुकूल
शनी	चंद्र	04-01-2039	04-08-2040	अनुकूल
शनी	मंगल	04-08-2040	13-09-2041	अनुकूल
शनी	राहु	13-09-2041	20-07-2044	अनुकूल
शनी	गुरु	20-07-2044	31-01-2047	श्रेष्ठ
बुध	गुरु	15-02-2059	23-05-2061	अनुकूल
बुध	शनी	23-05-2061	31-01-2064	अनुकूल
केतु	गुरु	19-01-2068	25-12-2068	अनुकूल

गुरु के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टि का अध्ययन कर निम्न समय आपके ग्रह निर्माण के लिए योग्य पाये गये हैं।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
20-06-2014	14-07-2015	श्रेष्ठ



काल प्रारंभ

काल के अन्त समय

विश्लेषण

13-09-2017	11-10-2018	अनुकूल
30-03-2019	23-04-2019	श्रेष्ठ
06-11-2019	30-03-2020	श्रेष्ठ
01-07-2020	20-11-2020	श्रेष्ठ
07-04-2021	14-09-2021	अनुकूल
22-11-2021	13-04-2022	अनुकूल
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
19-10-2025	05-12-2025	श्रेष्ठ
03-06-2026	31-10-2026	श्रेष्ठ
26-01-2027	26-06-2027	श्रेष्ठ
27-12-2028	29-03-2029	अनुकूल
26-08-2029	25-01-2030	अनुकूल
02-05-2030	23-09-2030	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	श्रेष्ठ
16-10-2031	05-03-2032	श्रेष्ठ
13-08-2032	23-10-2032	श्रेष्ठ
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
17-09-2037	17-01-2038	श्रेष्ठ
12-05-2038	07-10-2038	श्रेष्ठ
04-03-2039	02-06-2039	श्रेष्ठ
04-12-2040	06-05-2041	अनुकूल
01-08-2041	02-01-2042	अनुकूल
11-06-2042	28-08-2042	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	श्रेष्ठ
12-09-2043	16-02-2044	श्रेष्ठ
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल



काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	विश्लेषण
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
28-08-2049	08-03-2050	श्रेष्ठ
03-04-2050	19-09-2050	श्रेष्ठ
16-11-2052	15-12-2053	अनुकूल
11-01-2055	30-01-2056	श्रेष्ठ
14-02-2057	24-02-2058	अनुकूल
04-03-2059	16-07-2059	अनुकूल
26-11-2059	04-03-2060	अनुकूल
10-08-2061	02-09-2062	श्रेष्ठ
01-11-2064	30-11-2065	अनुकूल
26-12-2066	15-01-2068	श्रेष्ठ



अष्टकवर्ग फलादेश

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग पद्धति भारतीय ज्योतिष की भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से संबंधित अंको के प्रयोग का उपयोग करती है। अष्टकवर्ग का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण। यह राहु और केतु का अवरोध करके, लग्न को मिलाकर गृहों के अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है। गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गया है। एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे संबंधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है। हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिए जाते हैं। गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	कुल
मेष	7	4	2	2	2	6	5	28
वृषभ	3	4	6	8	3	4	3	31
मिथुन	4 *	3	3	6	0	5	3	24
कर्क	6	4	4	4	5 *	8		35
सिंह	6	7	7	5	7	5	6	43
कन्या	3	3	5 *	4	3	1	3	22
तुला	1	3 *	4	4 *	3	6 *	2	23
वृश्चिक	3	4	5	5	3	4	3	27
धनु	7	2	2	4	3	4	3	25
मकर	3	4	5	4	2	6	2	26
कुंभ	1	4	5	5	4	5	5	26
मीन	5	6	6	1	4	2	3	27
	49	48	54	52	39	56	39	337

* गृहों की स्थिति

लग्न तुला में है।

चन्द्र का अष्टकवर्ग

चन्द्र के प्रभाव से आपका भाग्य अपने जन्मकुण्डली में उपस्थित चार बिंदुओं के कारण होगा। आपको भाग्यशाली ताबीज या भाग्य का सन्देश पहुँचने वाला कहा जाएगा। यह प्रभाव आपके परिवार के संतोष और समृद्धि का कारण बन जाएगा।

सूर्य का अष्टकवर्ग

आपके जन्मकुण्डली के सूर्य अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिंदुओं के प्रभाव को टाल नहीं सकते। निरंतर यात्रा और शरीरिक प्रयासों से प्रभावित होकर आपका शरीर थक जाएगा। फिर भी आपका मानसिक नियंत्रण आपके हाथों में होगा। संघर्षों से मानसिक खिंचाव को दूर रखने के लिए ध्यान रखें। जीवन के कष्ट समय पर पढ़े लिखे लोगों का उपदेश लेना उचित होगा।

बुध गृह का अष्टकवर्ग

बुध के अष्टकवर्ग में उपस्थित पाँच बिंदु आपके भाग्य के लिए अनुकूल होंगे। आपकी कोमल और मैत्रीपूर्ण प्रकृति आपको प्रसिद्ध बनाएगी। दूसरों के दुख को समझने की शक्ति से आप लोगों के साथ अच्छे संबंध रख सकते हैं।

शुक्र का अष्टकवर्ग

आपका जीवन एक सन्तुलित जीवन होगा। अत्यधिक दुख के साथ सुख भी प्राप्त होगा। यह शुक्र अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिंदुओं के कारण है। आपको सुख और दुख तुल्य रूप से अनुभव करने का भाग्य मिला है।

मंगल गृह का अष्टकवर्ग



मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित पाँच बिंदु आपके आकर्षणीय और रोचक व्यवहार को सूचित करता है। आप हमेशा कोमल और अच्छे व्यवहार के होंगे और दूसरे लोग इसके लिए आपको अभिनन्दित करेंगे। आप रिश्तेदारों और मित्रों के बीच प्रसिद्ध हो जायेंगे। ऐसी कोई भी परिस्थिति नहीं होगी जिससे लोग आपके व्यवहार को बुरा कहेंगे।

गुरु का अष्टकवर्ग

आपके भाग्य में धन और संपत्ति की देवी आपके ऊपर हसँने और साथ ही अनुग्रहित करने में रुकावट नहीं डालेंगी। गुरु के अष्टकवर्ग में छः बिंदुओं के असाधारण उपस्थिति से आप अनुग्रहित होंगे। इससे आपको कभी भी धन और वाहने की कमी नहीं होगी। इन दोनों की सेवा हमेशा आपके साथ होगी।

शनी गृह का अष्टकवर्ग

जीवन में कुछ समय ऐसा होगा जब आपको कारावास का अवसर अधिक होगा। शनि आष्टकवर्ग में उपस्थित दो बिंदुओं के कारण अधिकारियों से मिलते जुलते समय विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए। आपको अक्सर बिमारियों का सामना करना पड़ेगा और स्वास्थ्य संबंधी संरक्षण पर ध्यान रखना चाहिए और औद्योगिक दस्तावेजों को नवीनतम रखना चाहिए।

सर्वाष्टकवर्ग फलादेश

आपके जन्मकुण्डली के ग्यारहवें भाव में दसवें भाव से ज्यादा बिंदु है, लेकिन बारहवें भाव में ग्यारहवें भाव से कम बिंदु है और उदीयमान में उपस्थित बिंदु ग्यारहवीं से भी महत्व है। अगर आप चाहे तो भी सम्पत्ति और प्रसिद्धि से दूर नहीं भाग सकते जो किसी ओर के ऊपर घटित है जिनके ग्रहों का प्रभाव आपके जैसे हो। आपकी समृद्धि और प्रसिद्धि जीवन में खुशी के लिए रुकावट नहीं होगी। जरूर ही आपका जीवन एक अनुग्रहित जीवन होगा।

आपके जन्मकुण्डली में बिंदुओं का अधिकतम फैलाव कर्क राशी से तुला राशी तक है जो आपके यौवन वर्षों को सूचित करता है। आपका उद्योग उन्नत पद तक पहुँच सकता है। शैक्षणिक और व्यक्तिगत अभिलाषा इस समय उत्पन्न होते हैं और संतोष और समृद्धि उच्च स्थान पर होंगे। भाग्य आपको बेकारी और शैक्षणिक खिंचाव का अनुभव करना का अवसर नहीं देगा। गृहस्थ संबंधी चिरानन्द भी आपको प्राप्त होगा।

गुरु, शुक्र, बुध द्वारा धारण किए राशियों में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा। आपकी शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगी और आपको ऊँचे पढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा। यह आपको उद्योग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्धि की ओर ले जाएगा। व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा। आपका सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा। यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा।

आपके लिए यह विशिष्ट समय 23 और 22 उम्र में होगा।



Jyotisyam.com
HEALTH . WEALTH . HAPPINESS



PROMINENT ASTROLOGER WANTS TO SPEAK TO YOU



**EXCLUSIVE ONE
TIME OFFER**

Rs ~~4999~~

IS NOW

Rs 1999

ASK HIM ALL YOUR DOUBTS FOR ONE HOUR



**WHATSAPP HIM ON
7022288938**



Jyotisyam.com
HEALTH . WEALTH . HAPPINESS



ONE TIME LIMITED OFFERS FOR YOU

GEM FINDER

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499

MARRIAGE HOROSCOPE

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499

CAREER HOROSCOPE

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499

MONTHLY HOROSCOPE

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499

NUMEROLOGY REPORT

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499

EDUCATION HOROSCOPE

~~Rs 999~~
IS NOW
Rs 499



WHATSAPP US ON
7022288938